भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 **अप्रैल** 2008 **अंक** 4

नमन

अचानक सूचना मिली कि डॉ० त्रिभुवन सिंह नहीं रहे, विश्वास न हुआ। जब तक इस सूचना की पुष्टि होती सांध्यकालिक पत्र 'गाण्डीव' आ गया और पता चला कि मणिकर्णिका पर उनकी अंत्येष्टि भी सम्पन्न हो गयी। अन्तिम-दर्शन न कर पाने का एक मानसिक-विक्षोभ घिर आया और स्मृतियों में जीवंत होने लगा उनका सहज व्यावहारिक व्यक्तित्व। वे विद्वान् थे, कुशल अध्यापक थे, छात्र-अधिष्ठाता थे, विभागाध्यक्ष थे, कुलपति थे, सब कुछ होकर भी वे सहज थे। 31 जुलाई, 1929 को आजमगढ़ जनपद के खानजहाँपुर गाँव में जन्मे डॉ० सिंह ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी भाषा और साहित्य विषय में एम०ए० और पी-एच०डी० किया और वहीं हिन्दी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए। बतौर अध्यापक वे छात्रों के बीच लोकप्रिय तो थे ही, छात्र-छात्राओं की समस्याएँ सुलझाते हुए वे उनके संरक्षक और अभिभावक का भी दायित्व निभाते थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने 'मानस-चतुश्शती' एवं 'सूर-पंचशती' समारोहों का आयोजन कराया, जिसके वे प्रमुख संयोजक रहे। महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति (7 जुलाई 1990 से 6 जुलाई 1993) के रूप में एक सफल प्रशासक और छात्रों-अध्यापकों के बीच लोकप्रिय होने का उन्हें श्रेय प्राप्त था। अपने कुलपतित्व काल में उन्होंने विद्यापीठ की शैक्षणिक-प्रणाली और प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त करते हुए विद्यापीठ को गरिमा प्रदान की। डॉ० सिंह ने कई शोध-प्रबन्धों का निर्देशन किया और अपने छात्रों का मार्ग-निर्देशन भी। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—रीतिकालीन दरबारी काव्य परम्परा

शेष पृष्ठ 2 पर

संवेदना की ओर...

आज हम संवेदनशून्य एवं असहिष्णु वातावरण में जी रहे हैं। परस्पर सहिष्णुता एवं संवेदना का नितान्त अभाव है। आज बेतहाशा बढ़ते हुए नगरीकरण एवं औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप इस आपाधापी के युग में, मॉल संस्कृति व गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा के दौर में, पश्चिमी चकाचौंध के अन्धानुकरण में हमारे भारतीय मूल्य, हमारी भारतीय संस्कृति, हमारे संस्कार, हमारा दर्शन, हमारी संवेदना, हमारी अनुभूति, हमारी भारतीय जीवन पद्धति कहीं ढँक-छुप सी गयी है, उस पर ढेरों धूल पड़ गयी है। यह केवल हमारी त्रासदी नहीं है बल्कि विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ धूलि-धूसर हो चली हैं, खो रहे हैं सांस्कृतिक-मूल्य और जीवन-दर्शन। भौतिक-विकास के आणविक-कचरे की तरह फैली हुई यह धूल लोगों के मनोमस्तिष्क पर जमती जा रही है। अर्थतंत्र के दबाव-तनाव के बीच विघटित हो चली है समाज की पारिवारिक इकाई, परस्पर भावनात्मक-सम्बन्धों के बीच दरार पड़ रही है और इन स्थितियों से सर्वाधिक आक्रान्त हैं बच्चे। प्रेम और वात्सल्य से परिपूर्ण माँ की गोद या नानी-दादी की कहानियों से वंचित बच्चों की मनोरचना कर रहे हैं दूरदर्शन के अ-श्लील(श्लील से परे, अश्लील के समीप)-हिंसक कार्यक्रम और हैरी पॉटर जैसे ऐन्द्रजालिक-कथानक जो बच्चों की आत्म-चेतना के बजाय आयातित-चेतना का विकास करते हैं। परिणाम दिखायी देने लगा है। बाल-हिंसा और यौनाचार मीडिया के विषय बन गये हैं। समाजशास्त्री चिंतित हैं, मनोवैज्ञानिक काउन्सलिंग कर रहे हैं और हमारे राजनेता इच्छा-शक्ति विहीन हैं। इन विषम परिस्थितियों में अभी भी बहुत-कुछ शेष है जो हमारे भविष्य को बचा सकता है।

यदि हम पूर्ण समर्पण और लगन के साथ इस धूल को हटाना चाहते हैं तो इसका एकमात्र रास्ता पुस्तकों से हो कर जाता है। वह घर खिड़की-विहीन है, जहाँ पुस्तकें नहीं होतीं। बच्चों को पुस्तकों की अहमियत (महत्ता और उपयोगिता) समझानी चाहिये। कभी-कभी बच्चों को अच्छी पुस्तकों के बीच ले जाना चाहिए ताकि पुस्तकों से उनकी आत्मीयता बढ़ सके। (ग्रीष्मावकाश प्रारम्भ होने वाला है, बच्चों को मॉल के अलावा पुस्तकों की दुकानों में भी ले जायें) उन्हें उपहार-स्वरूप चाकलेट, गेम आदि न दे कर अच्छी पुस्तकें देनी चाहिए। इसके लिए हमारा अपना साहित्य स्वयं में इतना समृद्ध है कि आयातित साहित्य की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। साथ ही हमें यह संकल्प लेना होगा कि स्वयं तो हम पुस्तकों के साथ मित्रता करेंगे और निभायेंगे भी, वरन् अपने जीवन-काल में कम से कम एक ऐसे व्यक्ति, जो पुस्तकों से विमुख है, को तब तक प्रेरित करते रहेंगे जब तक कि वह पुस्तकों का चिर-सखा न बन जाये। तत्पश्चात् उसे भी यह संकल्प लेने हेतु प्रेरित करेंगे।

मेरे विचार से यह कार्य समाज-सेवा का वह आयाम है जिससे परस्पर सहिष्णुता, मानवीय संवेदना व अनुभूति के धरातल पर आधारित ऐसे विचारवान सुसंस्कृत समाज का निर्माण हो सकता है जिसकी आज के उपरोक्त वर्णित दौर में नितान्त आवश्यकता है।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

और मतिराम, उपन्यास व यथार्थवाद, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास, हिन्दी साहित्य इतिहास के आईने में आदि। उन्होंने कई पुस्तकों का सम्पादन भी किया जिसमें अनेकानेक उत्कृष्ट समीक्षकों के महत्त्वपूर्ण निबन्धों से युक्त आप द्वारा सम्पादित 'साहित्यिक निबन्ध' पुस्तक का स्थान प्रमुख है। कई नये, सामयिक व अद्यतन विषयों पर नवीन लेखों का समावेश करते हुए इस पुस्तक को पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित कर आप प्रकाशनार्थ दे चुके थे और आज जबकि इस वासंती नवरात्र में पुस्तक का प्रकाशन सुनिश्चित हो चुका है, शोक है कि आप हमारे बीच नहीं हैं। इस कर्मठ, जुझारू, विद्वान-अध्यापक, कुशल प्रशासक और सहज हिन्दी-व्यक्तित्व को हमारा श्रद्धांजलिपूर्ण नमन!

दीपित अतीत गाथा, ये पुस्तकें बतातीं।
इतिहास का उजाला, ये पुस्तकें ही लातीं।
जलता है ज्ञान दीपक, ये पुस्तकें हैं बाती।
अज्ञान के तिमिर से सबको निकाल लातीं।

अक्षर सियाह काले, देते विमल उजाला।
विज्ञान की विभा को, इन पुस्तकों ने पाला।
संस्कृति हैं, सभ्यता हैं, रस रंग के खजाने।
जो कुछ रहे अजाने, इन पुस्तकों से जाने।

—आचार्य विष्णु विराट चतुर्वेदी
बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ौदा

अध्यापकों का ज्ञान कैसा है ?

आज सामान्यत: अध्यापक वर्ग कम से कम पढ़ता है। एक बार अध्यापक बन जाने के बाद शिक्षक अपना मूल्यांकन करना भूल जाता है। वह यह मानने लगता है कि उसकी जानकारी बिल्कुल सही है। जो ज्ञान वह पूर्व में प्राप्त कर चुका है उसी को छात्रों में दुहराता है। ज्ञान स्थिर या जड़ नहीं है। निरन्तर ज्ञान समय, परिस्थिति, काल और खोज के अनुसार विकसित होता है। वह ज्ञान पत्र-पत्रिकाओं में, पुस्तकों में निरन्तर प्रकाशित होता है किन्तु उस ज्ञान की तलाश बहुलांश अध्यापकों को नहीं होती। विद्यार्थी भी उस अतीत हो चुके ज्ञान को कुंजियों और गाइड के माध्यम से रटते और दुहराते हैं। उन्हें ज्ञान प्रवाह में अवगाहन करने की प्रेरणा नहीं मिलती क्योंकि अध्यापक की स्वयं की संवेदना उसके प्रति नहीं होती। इसी कारण छात्र में प्रतिभा का सृजन नहीं होता, जानने की इच्छा नहीं होती। किसी तरह परीक्षा पास करना उसका लक्ष्य होता है। परिणामस्वरूप उसके व्यक्तित्व का विकास भी नहीं हो पाता। **— पुरुषोत्तमदास मोदी**

पृष्ठ 1 का शेष

''पुस्तकें हमें केवल बौद्धिक रूप से ही सबल और सक्षम बनाकर एक जबरदस्त आत्मविश्वास से ही नहीं भर देतीं, बल्कि भाव-बोध के स्तर पर भी ऊपर उठाकर हमें एक अनोखी आत्मशक्ति प्रदान करती हैं। ये हमारे अनुभवों का उदात्तीकरण करने में सबसे अधिक सक्षम हैं। हालांकि कला के सभी रूप हमारे भावों को उदात्तता की ओर ले जाते हैं, लेकिन इनमें से पुस्तकें ही वे माध्यम हैं जो विशुद्ध उदात्तता प्रदान करती हैं। यहाँ 'विशुद्ध' शब्द इसलिए उपयोग में लाया जा रहा है, क्योंकि हम जब नाटक देखते हैं, चित्र देखते हैं या नृत्य देखते हैं तो संगीत को छोड़कर तब हमारा मस्तिष्क उन्हीं चित्रों तक सीमित हो जाता है जो हम देख रहे हैं। लेकिन जब हम पुस्तकें पढ़ते हैं (और संगीत सुनते हैं) तब हमारे मस्तिष्क में जो बिम्ब बनते हैं, वे शुद्ध रूप से हमारे अपने होते हैं। वे किसी के द्वारा दिये गये नहीं होते। स्वाभाविक है कि अपने ही द्वारा रचित बिम्ब हमें विशुद्ध उदात्तता की ओर ले जाते हैं।''*(भारतीय वाङ्मय : फरवरी-मार्च 2002 से)*

भौतिकता के इस युग में पुस्तकें ही संघर्षशील मनुष्य का मार्गदर्शन करती हैं, प्रेरणा देती हैं, आत्मविश्वास जागृत करती हैं। पुस्तकों के महत्त्व को जानने का यही समय है। अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए धन-सम्पत्ति जो भी छोड़ें वे निरर्थक होंगी यदि उसके उपभोक्ता को उसके उपयोग की शिक्षा नहीं मिलेगी। इसलिए आवश्यकता है कि हर घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय हो जहाँ पुस्तकें समय-समय पर सुख-दु:ख बाँट सकें। जीवन की विविधता, वैश्विक आवश्यकता में आज विभिन्न विषयों की पुस्तकों की आवश्यकता है जो मनोरंजन ही नहीं सामयिक समस्याओं का समाधान भी कर सकें। **—पराग कुमार मोदी**

अब विधायकजी नहीं आते लाइब्रेरी

विधानसभा के 403 और विधान परिषद के 100 यानि उत्तर प्रदेश विधानमण्डल के 503 सदस्यों में से सिर्फ 10 सदस्य ऐसे हैं, जिन्होंने पिछले सात महीने के दौरान विधानमण्डल की लाइब्रेरी में जाकर कुछ पढ़ने में रुचि दिखाई है। यह संख्या यहाँ के उन अधिकारियों-कर्मचारियों को भी चौंकाती है जिन्होंने वह दौर देखा है जब बतौर मुख्यमंत्री हेमवतीनंदन बहुगुणा, नारायणदत्त तिवारी, श्रीपति मिश्रा, रामनरेश यादव इस पुस्तकालय में नियमित रूप से आते थे और घण्टों यहां बैठकर अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकें पढ़ा करते थे। विधायकों की तो इतनी ज्यादा संख्या हो जाया करती थी कि अक्सर उनके बैठने की दिक्कत हो जाती थी।

लेकिन अब... ? विधानमण्डल पुस्तकालय के अधिकारी कहते हैं कि मुख्यमंत्री, मंत्री तो छोड़िये महीनों गुजर जाते हैं किसी विधायक के 'दर्शन' नहीं होते। 29 साल की सेवा के बाद रिटायर हुए विधानसभा सचिवालय के विशेष कार्याधिकारी समर बहादुर सिंह कहते हैं कि ''विधानमण्डल की लाइब्रेरी में हमने विधायकों को यूनिवर्सिटी के रिसर्च स्कालर की तरह सन्दर्भ की तलाश में जूझते देखा है। उनमें होड़ रहती थी कि कौन कितना ज्यादा अपने को अपडेट कर रहा है। अपने को श्रेष्ठ साबित करने के लिए वे ज्यादा से ज्यादा पुस्तकें पढ़ना चाहते थे। अक्सर वे एक-दूसरे से सवाल कर लिया करते थे कि तुमने इस राइटर को पढ़ा या नहीं ?'' समर बहादुर सिंह कहते हैं, ''यह मैं उस दौर की बात आपको बता रहा हूँ, जब विधायक निधि नहीं हुआ करती थी।'' विधानसभा परिसर स्थित इस पुस्तकालय में वर्तमान समय में साढ़े चार लाख से ज्यादा किताबें हैं। कोई ऐसा विषय और कोई ऐसा लेखक नहीं है जिसकी पुस्तक यहाँ उपलब्ध नहीं है। हर साल नयी पुस्तकें खरीदने के लिए दस लाख का बजट आता है। सन्दर्भ का तो यहाँ बेजोड़ खजाना है। 'हाउस ऑफ कॉमन्स' और 'हाउस ऑफ लॉर्डस्' की कार्यवाही भी यहाँ उपलब्ध रहती है। लाइब्रेरी से जुड़े अधिकारी बताते हैं कि नब्बे के दशक के बाद प्रदेश की राजनीति में जो बदलाव आया, उसका असर यहाँ के पुस्तकालय पर पड़ा। जीत कर आने वाले विधायकों के चेहरे बदल गये। सत्तारूढ़ और विपक्ष दोनों की प्राथमिकताएँ बदल गयीं। सदन चलने की अवधि कम होती गयी। सदन में बजट भी बिना बहस के पास होने लगा। विधायक क्षेत्र से जब लखनऊ आते हैं तो अपनी काम वाली जगह आते हैं। लाइब्रेरी उनकी प्राथमिकता में शामिल ही नहीं होती। लाइब्रेरी के अधिकारी-कर्मचारी याद करते हैं कि मुलायम सिंह यादव जब मुख्यमंत्री नहीं हुए थे तो वह अक्सर लाइब्रेरी आ जाते थे लेकिन मुख्यमंत्री बनने के बाद उनकी व्यस्तता ऐसी हुई कि वह लाइब्रेरी भूल ही गए। पूर्व संसदीय कार्यमंत्री **हृदयनारायण दीक्षित** कहते हैं कि इन सबका असर सदन की कार्यवाही के स्तर पर पड़ा है।

साखी, हिंदी की

दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै

लक्ष्मीधर मालवीय, *क्योतो, जापान*

(गतांक से आगे...)

आज बदबूदार दलदल में ऊभ-चूभ हो रहे इस विशाल क्षेत्र को उबारने की शक्ति क्या हिंदी में है? इसका उत्तर हाँ कि ना में पाने की उम्मीद करें, उसके पहले मन्दिर का कपाट खोलकर हिंदी का दर्शन तो कर लें। लीजिए, मैं दिए देता हूँ, उस कपाट की कुंजी, यह अक्षर!

ख़

यह आप देख क्या रहे हैं? हिंदी भाषी साक्षरों में 50 फ़ीसदी इसे 'र व' पढ़ेगा, क्योंकि इससे भिन्न रूपाकार वाला 'ख' उन्हें सिखलाया गया है। वह '**ख़ुदा**' को 'र वु दा' पढ़ेगा, '**खिड़की खोल दो**' को 'रि व ड़ की र वो ल दो' क्योंकि नागरी वर्णमाला के केवल इसी एक अक्षर 'ख' के पैर बाँध दिए गए हैं, कि कहीं कोई 'र वु दा' आदि न पढ़ जाए! मुझ पर कृपा कर 50-50 ऐसे शब्दों की सूची तो बना दीजिए, जिनके आदि, मध्य तथा अंत में '**ख़**' है! इसके साथ ही यह भी बताकर मुझ पर अनुग्रह करें कि उन शब्दों को 'र व' पढ़ने पर क्या बोधगम्य अर्थ निकलता है! जैसे कि 'रवुदा' का हिंदी की किसी बोली तक में क्या कोई अर्थ है? '**मूर्ख**' को 'मूरव' पढ़ देने से क्या कोई अर्थ भी ध्यान में आता है?

फिर अकेले 'ख' ही को क्यों चुना गया? नागरी वर्णमाला के आधे से अधिक वर्ण ऐसे हैं जो दूसरे अक्षर का भ्रम पैदा कर सकते हैं, घ - ध, भ - म, ज - न, य - प आदि। यदि 'ख' के सुधार के पीछे नेकनीयती होती तो 'ख' के साथ-साथ या कि बाद में, इन अक्षरों को भी सुधारा जाता! और नागरी की क्यों? अँग्रेज़ी के b - l, m - n, u - w जैसे वर्ण क्या भ्रम नहीं उत्पन्न करते? चीनी-जापानी अक्षरों की तो बात ही न करें! 大 — 犬 पहला महान् है, ऊपर दाईं ओर नुक़्ता लगा देने से कुत्ता! पर चीनी हो कि जापानी, 5 साल का बच्चा भी इन्हें तुरत चीन्ह लेता है! क्योंकि दूसरे देशों में विचारवान् लोग अपनी सांस्कृतिक सम्पदा के ऊपर हमारे समान मल-मूत्र त्याग नहीं करते!

पर नहीं, यह संशोधित 'ख' अकेले एक झटके में हिंदी और हिंदी भाषियों की दर्जनों सच्चाइयों को फुलझड़ी छूटने के समान उजागर कर देता है! उनमें से कुछ ही पर विचार करें।

सन् 805 में जापान के कोया पर्वत पर बौद्ध संत कोओबो दाइशि द्वारा संस्थापित मन्दिर के चारों ओर आज भी घना जंगल है। इसमें पुरानी-नई 2 लाख कब्रें हैं! बहुतेरी कब्रों के सिरहाने तर ऊपर पाँच भिन्नाकार पत्थरों का स्तम्भ है—सबसे ऊपर के तिकोने प्रस्तर खण्ड पर नागरी अक्षर, (जिसे जापान में सित्तन मोजि या 'सिद्धाक्षर' कहते हैं) 'ख' अंकित है। यह 'ख' आकाश है—तुलसीदास का, 'छिति जल पावक गगन समीरा', वही 'ख' जो इस श्लोक के शीर्ष पर है—

खं दिशो भूमिरापश्च चन्द्रार्कानलमारुतान्।
सर्वं संहरते कालस् तस्मात् कालो महत्तरः॥

एक हजार वर्ष के बीच किसी विज्ञ जापानी को 'ख' (गगन) पढ़ने में भ्रम न हुआ! इस लिए हिंदी का नया संशोधित 'ख' इस बात का प्रमाण है कि भारत की गाय पट्टी में बसने वालों के दिमाग में गोबर ही गोबर भरा है इस कारण वे 'ख' तक ठीक से नहीं पहचान सकते!

9 करोड़ महाराष्ट्री भाषी-प्रयोक्ता संख्या के विचार से भारत की भाषाओं में चौथे स्थान पर—13 सौ साल से आज तक जिस 'ख' वर्ण को चीन्हने में कभी भ्रमित न हुआ, आज भी किसी मराठा बच्चे तक को नहीं होता। यह हिंदी का नया 'ख' 9 करोड़ महाराष्ट्रियों को लतियाकर नागरी से दूर कर यही सिद्ध करता है कि सारे हिंदी भाषी ही मूर्ख हैं कि उन्हें नागरी का एक अक्षर तक ठीक से पढ़ना नहीं आता! सर्वोपरि तो, नया 'ख' घोषित करता है कि आज तक जब किसी हिंदी भाषी ने इस सरकारी नंगई का डट कर विरोध करने की कौन कहे, भेंड़ से समान मिमियाते हुए भी एतराज दर्ज न कराया, इसलिए सरकारी अहलकारों का गढ़ हुआ यह 'ख' ठट्ठा मारते हुए कह रहा है, ''हिन्दी के विधुर-विधवा प्रेमी-प्रेमिकाओं! तुम्हारी भाषा वह सार्वजनिक खुला हुआ स्थान है, जहाँ कोई भी जाकर अपनी हाजत दफ़ा कर जा सकता है! वहीं पड़े-पड़े, स्मरण करो बार-बार! ऐसा पहले भी हुआ है! याद करो, वर्धा से हिन्दुस्तानी के प्रचार के लिए पाणिनि के प्रथम सूत्र में निर्दिष्ट मूल स्वर अ इ उ के आगे पीछे ऊपर और नीचे से मात्राएँ घुसेड़ी गई हैं; सम्पूर्णानन्द के मुख्यमंत्रित्व काल में इकार, ईकार की खड़ी पाई काट-छाँटकर लगाई गई—क्या इसे भूल गए! ऐसी दशा केवल घूरे ही की हो सकती है, भविष्य में भी हिंदी भाषा घूरा की समस्थानीय ही बनी रहेगी!''

हिंदी को कूड़े-कचरे का घूरा बनाने के लिए सरकार को क्यों दोष दें, जब कि हिंदी की जितनी 'हिंदी' स्वयं हिंदीवालों ने की है, उसके बाद इस भाषा को और भी अधिक दुर्गंधित करने की कोई गुंजाइश ही न रह गई! हिंदी वर्णमाला में 'ड़' 'ढ़' तथा चंद्रबिंदु; उर्दू इमले में टे ड़े गाफ़ दोचश्मी हे का सन् 1800 के पहले जब नामोनिशान तक न था, हमारे प्रकांड विद्वान् आचार्यों द्वारा सम्पादित ऊपर बताए गए साल से पहले के देव, बिहारीदास, तुलसी, सूर, कबीर, चंद बरदाई, विद्यापति—यहाँ तक कि ऋग्वेद तक के पाठ में ईस्ट इंडिया कंपनी के मुलाज़िम गिलक्राइष्ट के जोड़े-तोड़े इन नागरी अक्षरों का प्रयोग, पुनर्बार इसका ऐलान करता है कि हिंदी एक घूरा है, जिस पर जो भी चाहे अपना गलीज़ फेंक जा सकता है! भारत के बाहर तो इन तमाम सम्पादित कूड़े-कचरे को कोई भी समझदार अध्येता या पाठक लम्बी डंडी से भी नहीं छूता! अमरीका में प्रोफ़ेसर हॉले तथा ब्रेयांट ने सूरसागर का पाठ सम्पादन किया है, उसका क्रमिक विकास भी दिखलाते हुए। हिंदी का प्रथम विलोमाक्षर कोश, एक हज़ार पृष्ठ का, एक जापानी प्राध्यापक ने तैयार कर तोक्यो से प्रकाशित किया है। उनके कमरे में उर्दू हिंदी के तमाम शब्दकोष लगे देखकर मैंने हिंदी शब्दसागर न होने पर उनका ध्यान दिलाया तो वह बोले, ''उसमें इतनी सारी भद्दी भूलें हैं....'' सुनकर मेरे गाल पर तमाचा लगा था! उसी विश्वविद्यालय में मैं प्राध्यापक था और 35 वर्ष हुए, जब 18 साल के किशोर वह हिंदी विभाग में दाखिल हुए थे, उन्हें नागरी अक्षरों का उच्चारण सिखलाया था मैंने! लगभग डेढ़ हजार पन्नों में **देव सम्पूर्ण ग्रन्थावली** के तीन खंड, एक हज़ार पन्नों में बिहारीदास की तीन खंडों में **सतसई** जापान के इस गाँव से सम्पादित होकर भारत भेजी गई है, प्रकाशित होने को! यह मैं शेखी बघारने के लिए नहीं बता रहा बल्कि आगे यह पूछने के इरादे से कि भारत में किसी ने इन्हें क्यों सम्पादित न किया? यह हिंदी के नाते से ग़ैरतमंद होने का, या कि नहीं, 'ग़ैरत मंद' होने का भेद है कि मेरे प्रश्न का उत्तर यहाँ मुझ तक पहुँच नहीं रहा है!

भारत में 'सूरसागर' 'आल्हा' जैसे कभी लोकप्रिय रहे ग्रन्थों की छपी हुई पुस्तक बाज़ार में खोजकर देखें, हो सकता है, पुरानी पुस्तकों की दूकान में कहीं पड़ी मिल जाए! क्योंकि हिंदी पढ़ी लिखी साधारण जनता तक हिंदी की सारी कि सारी साहित्यिक पुरानी थाती को कब की ठुकरा चुकी है! ऐसा क्यों और कब से, मैं चिन्हा सकता हूँ!

मुंशी नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, से छपी पुस्तक सूरजपुर की कहानी (सन् 1862); पावस कवित्त संग्रह (1893); 269 पृष्ठों का छंदोबद्ध अमरकोश भाषा (1905) मेरे पास यहाँ है। नवलकिशोर प्रेस से 4000 से ऊपर पुस्तकें

प्रकाशित हुई हैं—इनके नाम देखने भर से पता चलता है कि, फ़ारसी-अरबी, उर्दू और हिंदी के शब्दकोष समेत, सब ऐसी पुस्तकें हैं जिन्हें पाठक, रुचिकर होने से, खरीदकर ज़रूर पढ़ता रहा होगा। बनारस के भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित पुस्तकों की सूची ही देख लें! वे पुस्तकें पाठकों को रुचिकर लगती थीं, इसलिए बिकती भी थीं। सन् 1900 के आसपास मिर्ज़ापुर और चुनार से क्या प्रकाशित होता था, किसी से पता करें!

हकीकत यह है कि पिछले 50 बरसों से हिंदी की बदौलत मालपुआ और मोहनभोग जैसे तर माल चाभने वाले आचार्य, कवि, लेखक, संपादक, प्रकाशक अपने बच्चों को तो कान्वेंट और ज़बरों के स्कूल-कालेज में भेज, अँग्रेजी में उच्च स्तर की शिक्षा दिलाकर आई०टी०, आइ०ए०एस० की ड्योढ़ियाँ ही नहीं, देसी सरहदें भी लँघा रहे हैं, और ढोर डंगर के साथ सालाना बाढ़ में डूबते उतराते, जीते कि मरते हुए तमाम साधारण साक्षर और निरक्षर जनों को विज्ञापनी, फ़िल्मी ढरकों से हिंglish पिला और खिला कर उन बेचारों की बोली भाषा की जड़ों में मट्ठा डाल रहे हैं! हकला बकला मुँह बाए हुए वह अब सिर्फ़ देख रहा है मगर पहचान कुछ नहीं पाता। भारत की गाय पट्टी में दलित समर्थक राजनीतिक दल का प्रभुत्व जितने समय से बना हुआ है, उसके एक चौथाई समय में इस पूरे क्षेत्र के सारे के सारे स्त्री पुरुष को हिंदी की बारहखड़ी और 1 से 9 तथा 0 के अंक से लैस किया जा सकता था! लेकिन फिर तो वह नृपशु से ऊपर उठकर नर हो गया होता!

इस दुरवस्था से उबारने की शक्ति क्या हिंदी में है? पिछले 50 वर्षों में गंगा यमुना का जितना जल बहकर सागर में मिल गया है, उसे मिश्र भानुपति तथा जयदेव के बिहार, कबीर-तुलसी के मगध-अवध, सूर, मतिराम और देव आदि के ब्रज मंडल, ग़ालिब रहीम और खुसरो की दिल्ली के बंजर हो गए विशाल भू खंड को फिर से सींचने के लिए लौटा लाना, यह द्वितीय भगीरथ ही संभव कर सकता है।

निष्कर्ष रूप में आदि क्रम से कहा जाए तो जिन्हें हिंदी भाषा और साहित्य से सरोकार है, जिन्हें इस विस्तृत क्षेत्र में बस रही अध नंगी, अध पेट खाते हुए, निरक्षर मर जाने वाले करोड़ों मनुष्यों की हितकामना वांछित है, उन्हें घूरे और हिंदी को अलग-अलग करना होगा।

भ्रष्ट 'ख्' को ख़ारिज कराना इसका पहला चरण है। व्यक्ति हो या प्रकाशक, जो हिंदी के एक अक्षर की प्रतिष्ठा नहीं बनाए रख सकता, उससे हिंदी भाषा और साहित्य के संवर्धन की आशा करना वंध्या-सुत की कल्पना के समान पाखंड है। मुझे हिंदी में लिखने की आवश्यकता होती है, उसमें से कुछ प्रकाशन के लिए भी होता है। **देव सम्पूर्ण ग्रन्थावली** तथा **सतसई** की प्रेस के लिए आदर्श प्रति मैंने तैयार कर प्रकाशक को दी थी। श्री पुरुषोत्तमदास मोदी जी ने मेरी एक पुस्तक **लाई हयात आए** प्रकाशित की। उन्होंने मेरे द्वारा तैयार इसकी प्रति भी उदारता पूर्वक स्वीकार की। ये आदर्श प्रतियाँ लांछनीय 'ख' को अंगीकार न करने के लिए मैंने स्वयं तैयार की। भ्रष्ट 'ख्' वाली कोई पुस्तक न मैं खरीदता हूँ और न पढ़ता हूँ! वह कालिदास ग्रन्थावली का पूना संस्करण हो या चौखंभा के इधर के प्रकाशन। हिंदी की पुनः प्रतिष्ठा आप यदि चाहते हों तो आपको भी ऐसा करना चाहिए।

दूसरे, हिंदी भाषा के सहज स्वाभाविक विकास में बहुत बड़ा अड़ंगा काशी और इलाहाबाद के विश्वविद्यालयों में स्वतंत्र हिंदी विभाग की स्थापना में लगा है—कृत्रिम हिंदी भाषा के ये कारखाने थे! क्या यह मात्र संयोग है कि राहुल और आचार्य किशोरीदास वाजपेयी जैसे विद्वानों के लिए इन विश्वविद्यालयों के द्वार सदा जकड़ बंद रहे! मेरा इन दोनों ही स्थानों से अति निकट का निजी सम्बन्ध रहा है, फिर भी नम्रता पूर्वक कहे बिना नहीं रहा जाता, ''आचार्य जी, लोग इस वक्त ऊँघ रहे हैं, इससे आपकी कुर्सी बची हुई है! कोई दूसरा देश होता तो वह कब की अंतर्धान हो चुकी होती! हिंदी का बृहत् प्रामाणिक शब्द कोष हो कि विश्वकोष, मामूली स्तर की जनोपयोगी हिंदी में पुस्तकें तक, अगले 50 वर्षों तक तो सामने आने से रहीं। उसके बाद यदि कभी निर्मित हुईं तो उस दिन के लिए आप स्वयं जागिए, और अपने सहयोगियों को नाधिए। उनसे और डिगरी पाने को इच्छुक छात्रों से कुछ ठोस काम कराकर सामने लाइए—मसलन, जिले के तमाम उद्योग-धंधों में लगे हुए लोगों से उनके पेशे में व्यवहृत शब्दावली का संग्रह, आसपास के पुस्तक संग्रहों से सारे हस्तलिखित तथा प्रकाशित ग्रन्थों की शब्दानुक्रमणिका कम्प्यूटर में, जिले में अब तक प्रकाशित समाचार पत्र-पत्रिका की स्कैनर पर कापी—करने के कामों की भला कमी है! मगर यह भत्ताचार्यों के बस का काम नहीं, इसे वही पूरा कर सकता है जिसमें अपना पित्त-पानी एक कर सकने का माद्दा हो।''

अन्तिम एक बात के कभी घटित होने में मुझे बड़ा सन्देह है। वह है, सरकारी यमपाश से हिंदी का छुटकारा! नोबेल पुरस्कार की धन राशि से बड़ी राशि का हिंदी नोबेल पुरस्कार! एक अरब रुपया लगाकर संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को मान्यता! 10 करोड़ खर्च कर न्यूयॉर्क में विश्व हिंदी सम्मेलन! पुरानी मसल है, जो गुड़ देने से मरता हो, उसे माहुर क्यों खिलाएँ! अँग्रेज़ी के वर्चस्व को बनाए रखने के लिए हिंदी की 'कुत्ता खसी' से अचूक उपाय और दूसरा भला क्या हो सकता है!

मगर नितान्त असम्भव तो नहीं! क्या जाने हिंदी की घूरा मुक्ति से यह चमत्कार घटित हो जाए! चिता पर रख दिए जाने के बाद भी मुर्दे के उठ बैठने की घटना क्या हमारे महान् देश में नहीं हुई है! हो किसी माँ के जाए में हिंदी के गले में कई फेरे लिपटी इन जंज़ीरों को तोड़ फेंकने का दम, तो आए वह आगे!

मेरे सखा भदन्तजी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन में नागरी लिपि में कतिपय सुधार हेतु गोष्ठी थी। उसमें अनेक हिन्दी भाषाविद् उपस्थित थे। भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी आये थे। लिपि की त्रुटियों के सुधार की चर्चा हो रही थी। भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने कहा—''**ख** से र और व का भ्रम होता है अत: **ख** में थोड़ा परिवर्तन करना चाहिए ताकि यह भ्रम न हो।'' थोड़ी देर बाद बेढबजी बोलने खड़े हुए। उन्होंने बड़ी गम्भीरता से कहा—''आज मुझे एक बहुत बड़े तथ्य की जानकारी हुई, भदन्त आनन्द जी मुझसे क्यों रुष्ट रहते हैं, मेरे पत्रों का उत्तर नहीं देते। मैं अपने पत्रों में उन्हें सम्बोधित करता 'मेरे **सरवा** आनन्द जी'।''

सारे सभागार में अट्टहास छा गया, भदन्तजी मुस्करा कर गर्दन नीची किए बैठे रहे। '**सरवा**' को सरवा (साला) पढ़ा जाना स्वाभाविक था।

'साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य'
सम्पा० : प्रो० भवानीलाल भारतीय, से

मैं हिन्दी हूँ

मैं हिन्दी हूँ। मैं अभी जिन्दा हूँ। मुझे अमीरों, राजनेताओं और अफसरों ने कैद करके रखा हुआ है। इसीलिए मैं फल-फूल नहीं पा रही हूँ। जबकि मेरे बच्चे जानते हैं कि मैं ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हूँ और मेरे ही दम से एकता बरकरार है। फिर भी लोग मेरे साथ राजनीति कर रहे हैं। मुझे तरह-तरह से प्रताड़ित कर रहे हैं। लेकिन मेरे बच्चों याद रखो कि जब तक मैं तुम्हारे पास हूँ, मेरा कोई भी बाल-बाँका नहीं कर सकता। लेकिन जिस दिन तुम मुझे अपनी नजरों से गिरा दोगे उस दिन मैं स्वयं ही मर जाऊँगी। जानते हो फिर क्या होगा? उस दिन तुम सब फिर से गुलाम हो जाओगे? इसलिए मुझे समझो, पढ़ो, मुझे कैद से रिहा कराओ। इसी में तुम्हारी भलाई है। **—अजीज जौहरी,** इलाहाबाद

जब तक भारत का राज्य जनता की भाषा में नहीं चलेगा, भारत की जनता प्राणवान नहीं बनेगी और भारत की संस्कृति में चैतन्य नहीं आयेगा।
—काका कालेलकर

राष्ट्रीय रूप में हिन्दी

—डॉ० महीप सिंह

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ ने 13, 14 व 15 मार्च को अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन का आयोजन किया। मैं दो दिन इस सम्मेलन में उपस्थित था। दूसरे दिन पहले सत्र का विषय था— हिन्दीतर भाषी रचनाकारों का योगदान और दूसरा सत्र नारी विमर्श पर केन्द्रित था। अन्तिम दिन दोपहर के पहले का सत्र दलित विमर्श पर आधारित था। सभी सत्रों में साहित्य प्रेमी श्रोताओं की उपस्थिति से पूरा हाल भरा रहा। प्राय: साहित्यिक आयोजनों में ऐसी स्थिति नहीं होती। हिन्दीतर भाषी प्रदेशों में हिन्दी के मौलिक रचनाकारों की निरन्तर घटती हुई रुचि और संख्या के सम्बन्ध में मैं अपनी चिन्ता और सरोकार इससे पहले भी अनेक आलेखों में व्यक्त कर चुका हूँ। इस सत्र में अनेक वक्ताओं ने यह मुद्दा उठाया कि इन प्रदेशों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की क्या स्थिति है ?

क्षेत्रीय भाषाओं की कृतियों का हिन्दी में और हिन्दी की कृतियों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कार्य किस प्रकार हो रहा है ? उन प्रदेशों में हिन्दी-लेखकों को कितना पढ़ा जाता है और हिन्दी की पुस्तकें कितनी बिकती हैं ? मुझे लगता है कि विषय का मूल बिन्दु कुछ और है। हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी का कार्य दो स्तरों पर होता रहा है। पहले स्तर पर लगभग सभी प्रदेशों में हिन्दी प्रचार सभाएँ कार्य करती हैं। ये सभाएँ हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का अंग थीं। राष्ट्रीय स्तर के सभी बड़े नेता और चिंतक, भले ही उनकी मातृभाषा कुछ भी रही हो, यह मानते थे कि राष्ट्रीय एकता के लिए सम्पूर्ण भारत में एक सम्पर्क भाषा की आवश्यकता है। हिन्दी इस आवश्यकता की पूर्ति करती है। इसलिए सम्पूर्ण देश में हिन्दी का प्रचार-प्रसार राष्ट्रीय आन्दोलन का अभिन्न अंग रहा है।

इसी के साथ यह भी सच है कि विभिन्न क्षेत्रों से आए सभी बड़े नेता अपना अधिक लेखन कार्य अपनी-अपनी मातृभाषाओं में करते थे। उनकी दृष्टि में राष्ट्रभाषा के स्तर पर हिन्दी और अपनी मातृभाषा का आपस में कोई विरोध या द्वंद्व नहीं था। ये सभी लेखक यह बात भी मानते थे कि सभी भारतीय भाषाओं का अपना महत्त्व है, उनकी अपनी अस्मिता है। ये भाषाएँ समुन्नत हों, समृद्ध हों और राष्ट्रीय जीवन में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकें, इसलिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में इस सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया था कि प्रान्तीय स्वराज को सफल बनाने के लिए शासन और शिक्षा, दोनों का माध्यम उस प्रान्त की भाषा हो। 1917 में लोकमान्य तिलक ने कलकत्ता कांग्रेस में भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की वकालत की थी। स्वतंत्र भारत के छठे-सातवें दशक में यह कार्य सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय कार्य का सहभागी बन कर हिन्दी प्रचार का कार्य सारे देश में हुआ। उसका एक परिणाम यह भी हुआ कि हिन्दीतर प्रदेशों के अनेक रचनाकारों ने न केवल हिन्दी भाषा और साहित्य का उच्चस्तरीय अध्ययन किया, बल्कि हिन्दी को अपनी सर्जनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम भी बना लिया। मन्मथनाथ गुप्त बांग्लाभाषी थे। अनंत गोपाल शेवड़े, गजानन माधव मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे, चंद्रकांत वांदिवडेकर आदि कितने ही लेखकों की मातृभाषा मराठी है। तेलुगू भाषी अरिगपूडि रमेश चौधरी ने एक दर्जन से अधिक मौलिक उपन्यास हिन्दी में लिखे। बालशौरि रेड्डी और आर० शौरीराजन ने हिन्दी में निरन्तर लिखा है।

केरल में मलयालम भाषी हिन्दी प्राध्यापकों, लेखकों, अनुवादकों की लम्बी परम्परा है। गुजराती, पंजाबी और सिंधी मातृभाषा वाले हिन्दी लेखकों की लम्बी सूची है, किन्तु हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले आलोचक ऐसी दुरभिसंधि से ग्रस्त दिखाई देते हैं कि वे स्वनिर्मित दायरे से बाहर नहीं निकलना चाहते।

एक आलोचक ने उस संगोष्ठी में कहा कि विभिन्न भाषाओं के लेखन में उनका प्रदेश बोलता है, किन्तु हिन्दी लेखन में सारा भारत बोलता है। यह बड़ा चुस्त दिखने वाला वाक्य है। स्वाभाविक है इसे सुनकर सभागार में खूब तालियाँ बजीं, किन्तु इस कथन का निहितार्थ क्या है ? क्या इसका अर्थ यह है कि देश की अन्य सभी भाषाएँ अपने प्रदेशों की ही भावनाओं को वाणी देती हैं और हिन्दी सम्पूर्ण राष्ट्र को वाणी देती है ? देखने में यह बात कितनी मोहक लगती है, किन्तु क्या यह अन्य भारतीय भाषाओं को छोटा और हीन नहीं बनाती है ? यदि ऐसा है तो यह बड़ा खतरनाक संदेश है। संविधान आठवें अनुच्छेद में शामिल सभी भाषाओं को भारत की राष्ट्रीय भाषाएँ मानता है और हिन्दी को केन्द्र सरकार की राजभाषा के रूप में स्वीकार करता है। **मेरी मान्यता है कि भारत की किसी भी भाषा में लिखे गए साहित्य में केवल वह प्रदेश ही नहीं बोलता, सम्पूर्ण भारत बोलता है। यदि यह देश एक अखण्ड राष्ट्र है तो इस राष्ट्र के मणिपुर जैसे छोटे प्रदेश की भाषा में भी पूरा भारतीय मानस अभिव्यक्ति पाता है।** यदि किसी की सोच में हिन्दी को वरिष्ठ और अन्य भाषाओं को द्वितीय श्रेणी की भाषा होने का आग्रह है तो हिन्दी के लिए इससे अधिक हानिकर और कोई बात नहीं हो सकती।

हिन्दी में जब नारी विमर्श अथवा दलित विमर्श की बात होती है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि साहित्य में स्त्री और पुरुष लेखकों के मध्य कोई टकराव है। इसी प्रकार कुछ लोग इस बहस में पड़ जाते हैं कि साहित्य दलित किस प्रकार हो जाता है ? साहित्य को केवल साहित्य के रूप में देखना चाहिए। इस स्थिति में मूल मुद्दा गड़बड़ा जाता है। हम सभी जानते हैं कि हमारे सामाजिक जीवन में स्त्री और दलित वर्ग शताब्दियों से उत्पीड़ित और उपेक्षित रहे हैं। साहित्य में जब इनकी चर्चा होती है तो उसका अर्थ यह है कि ये दोनों वंचित वर्ग आज के साहित्य में आत्म अभिव्यक्ति किस प्रकार कर रहे हैं और जागरूक समाज उसे किस प्रकार स्वीकार कर रहा है। आज से कुछ वर्ष पहले बहुत कम लेखिकाएँ रचना कर्म में भागीदार थीं। महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, चन्द्र किरण जैसे कुछ नाम ही सामने आते थे। आज का परिदृश्य पूरी तरह बदला हुआ है। आज साहित्य की सभी विधाओं में नारी रचनाकारों का वर्चस्व है। ऐसे विमर्श में यह बात रेखांकित होती है कि ये रचनाकार आधुनिक नारी की चिन्ताओं को किस प्रकार अभिव्यक्ति दे रही हैं। साहित्य में सर्वाधिक चर्चित और विवादास्पद मुद्दा दलित विमर्श है। समकालीन साहित्य की कोई भी चर्चा इसके बिना पूरी नहीं होती।

इस सम्मेलन के दलित विमर्श सत्र के अध्यक्ष मण्डल में बैठे लगभग सभी विमर्शकर्ता इसी वर्ग के थे। मराठी भाषा में चार दशक पहले दलित साहित्य की चर्चा प्रारम्भ हुई। डॉ० अम्बेडकर के जीवन-दर्शन से इस वर्ग में राजनीतिक चेतना का उभार आया। परम्परागत मान्यताओं और असमानता मूलक व्यवस्थाओं के प्रति बड़ी रोषपूर्ण अभिव्यक्तियाँ मराठी दलित साहित्य में दिखाई दीं। अब यह रोष और आक्रोश भरा स्वर अनेक भाषाओं में दिखाई दे रहा है।

राजनीति में दलित वर्ग की सक्रिय भागीदारी और उपलब्धियों ने इस स्वर को अधिक तीव्र किया है। दलित विमर्श सत्र में सभी वक्ताओं के स्वर में परम्परागत मान्यताओं के प्रति जो असंतोष और आक्रोश दिखाई दे रहा था वह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि समाज कितनी तेज गति से बदल रहा है। आज जब राजनीति और अर्थतंत्र की आँधी में सब कुछ बहा चला जा रहा है, ऐसे साहित्यिक आयोजन करना बहुत दूभर कार्य है, किन्तु इनकी सार्थकता से कौन इनकार कर सकता है।

> ''भाषिक अस्मिता के भाव का जागरण किये बिना साहित्य-सृजन के हमारे तमाम प्रयास अधूरे हैं क्योंकि भारतीय भाषाएँ केवल अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं है; अपितु वे हमारी संस्कृति की निर्मात्री और धात्री हैं। अनादिकाल से हमारी भाषाएँ हमारी संस्कृति की पोषक और संरक्षक रही हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि आज के इस 'संस्कृति-विमुख' समय से संघर्ष करने के लिए हम अपनी मातृ-भाषाओं की ओजस्विता को जगायें। हमारा यह प्रयास ठीक वैसा ही होगा, जैसा प्रयास सूर, तुलसी आदि कवियों ने अपनी मातृ-भाषाओं की सर्जनात्मकता के बल से मध्यकालीन सांस्कृतिक विकृतियों का सामना करने के लिए सफलतापूर्वक किया।'' **—डॉ० बालशौरि रेड्डी**

अत्र-तत्र-सर्वत्र

किताब का भविष्य

बहुत कुछ बदल गया। संचार क्रान्ति के बाद अगर कुछ नहीं बदला है तो हमारे पढ़ने का तरीका। स्याही से छपी कागज की किताबें हम आज भी वैसे ही पढ़ते हैं जैसे लोग गुटेनबर्ग के जमाने में पढ़ा करते थे। पर किताबों का दुनिया का सबसे बड़ा ऑनलाइन स्टोर चलाने वाली कम्पनी अमेजन का दावा है कि अब किताबें पढ़ने का तरीका भी बदल जाएगा। कम्पनी ने अपनी ई-बुक 'किंडले' को बाजार में उतारते हुए यह उम्मीद जाहिर की है कि स्याही की दुनिया अब जल्द ही डिजिटल अक्षरों में बदल जाएगी। इसी के साथ अखबार और किताबें पढ़ने के ही नहीं, खरीदने के भी बदलते तरीके ने बाजार में दस्तक दे दी है।

लेकिन 'किंडले' इस बाजार की पहली ई-बुक नहीं है। कम्प्यूटर पर किताब परोसने की कोशिशों का एक लम्बा इतिहास है। एक जमाने में कई किताबें टेक्स्ट फॉरमेट में कम्प्यूटर की दुनिया में आई थीं, लेकिन उनके साथ दिक्कत यह थी कि उन्हें पढ़ने का सबसे सहज तरीका उनका प्रिण्ट आउट लेना ही था।

हालांकि उन्हें कम्प्यूटर पर पढ़ा जा सकता था, लेकिन उस जमाने के मॉनीटर पर अक्षर जिस तरह चमकते थे, उससे किसी बड़ी किताब को पढ़ना आँखों पर अत्याचार की तरह ही था। लेकिन सिर्फ इससे ही टेक्स्ट फॉरमेट खत्म नहीं हुआ बल्कि आज तक जारी है। मसलन 1971 में बने प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग ने तकरीबन 22,000 ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की टेक्स्ट फाइल अपने-अपने ढेर सारे इंटरनेट और एफटीपी सर्वर्स पर उपलब्ध कराई हैं जो कॉपीराइट की सीमा से बाहर आ चुकी हैं। बाद में गुटेनबर्ग जैसे कई दूसरी वेबसाइट भी शुरू हुईं जिन्होंने पुरानी किताबों को दूसरे नए फॉरमेट में भी उपलब्ध कराने की कोशिश की। लेकिन ई-बुक की दिशा में पहला महत्त्वपूर्ण प्रयास 1990 में तब हुआ जब एक्रोबैट रीडर सामने आया। इसके पहले और बाद में कई और भी फॉरमेट आए, लेकिन सबसे लोकप्रिय यही हुआ। एक तो यह उस समय सामने आया जब प्रकाशन का पूरा व्यवसाय आमतौर पर डिजिटल हो चुका था और एक्रोबैट को एडोबी नाम की उस कम्पनी ने पेश किया था जो डिजिटल एडीटिंग का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी थी। यह फॉरमेट अभी भी चलता है लेकिन इसकी सीमाएँ हैं। महज किताब पढ़ने के लिए आप पूरा कम्प्यूटर लेकर नहीं घूम सकते, हालांकि अब इसका पीडीए वर्जन भी आ गया है लेकिन वह ज्यादा चला नहीं है। इसी दौर में तकनीक की दुनिया ने ऐसी किताब विकसित करने की होड़ शुरू की जिसे आप जब चाहें पढ़ सकें और बगल में दबा कर घूम भी सकें। इसी क्रम में माइक्रोसॉफ्ट ने अपना टेबलेट पीसी, सोनी, एरिक्सन और फिजुत्सु जैसी कम्पनियों के कई रीडर बाजार में आए जरूर लेकिन पढ़ने वालों की आदत नहीं बदल सके।

'किंडले' की खासियत यही है कि उसने इस आदत के बदलने की उम्मीद दी है। एक तो इसमें किताब डाउनलोड करने के लिए इसे कम्प्यूटर से जोड़ना नहीं पड़ता। यह खुद ही किताब ही नहीं अखबार भी डाउनलोड कर लेता है। दूसरे इसकी मेमोरी में तकरीबन ढाई सौ तक किताबें स्टोर की जा सकती हैं। इसके डिस्प्ले में ज्यादा चमक नहीं है, इसलिए यह कम्प्यूटर या मोबाइल की तरह आँखों को कष्ट देने वाला नहीं है। इनबिल्ट डिक्शनरी भी है, इसलिए कठिन शब्दों से घबराने की भी जरूरत नहीं। यह बिक भी खूब रहा है और कुछ ही दिन में कामयाब उत्पादों की फेहरिस्त में आ गया है।

फिलहाल कहना मुश्किल है कि यह कामयाबी कितनी दूर तक जाएगी। इसलिए कि ढोल मजीरे के साथ बाजार में आए ऐसे उत्पाद अक्सर अल्पजीवी भी साबित होते हैं। फिर पिछला ट्रेंड यह बताता है कि कनवर्जेंस के जमाने की नई पीढ़ी शायद बातचीत, संगीत और पढ़ने के लिए तीन अलग-अलग उपकरण लेकर चलना न पसन्द करे। इसी दबाव के चलते एप्पल को अपने सफल उत्पाद आईपॉड से आगे बढ़ते हुए आईफोन लांच करना पड़ा। लेकिन कम से कम फिलहाल 'किंडले' के स्वागत का समय है उसके विदाई गीत का नहीं।

मोबाईल पर पुस्तकें भी उपलब्ध होंगी

अब आप अपने मोबाइल पर भी किताबें पढ़ सकेंगे। मशहूर प्रकाशक पेंगुइन ने यह व्यवस्था भारत में शुरू की है। पेंगुइन द्वारा यहाँ जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार पेंगुइन बुक्स इण्डिया ने मोबीफ्यूजन कम्पनी के साथ एक समझौता किया है, जिसके तहत पेंगुइन की पुस्तकें मोबाइल पर उपलब्ध होंगी जिससे पाठक ये पुस्तकें राह चलते भी पढ़ सकेंगे। अभी यह सुविधा केवल अंग्रेजी पुस्तकों के लिए ही है। फिलहाल पेंगुइन ने तीन पुस्तकें उपलब्ध करवायी हैं जो मदर टेरेसा, दलाईलामा तथा प्रार्थनाओं से सम्बन्धित हैं।

आम लोगों की पहुँच में होगा विश्व का दुर्लभ 'खजाना'

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की विश्वविख्यात बोडलियन लाइब्रेरी के दरवाजे अब हर किसी के लिए खुलने जा रहे हैं। यह इस लाइब्रेरी के इतिहास में एक अनूठा अवसर होगा।

पुस्तकों, पाण्डुलिपियों और प्राचीन कला के बेजोड़ कलेक्शन के लिए जानी जाने वाली इस लाइब्रेरी की सेवाएँ अब तक सिर्फ स्कॉलरों के लिए ही सीमित थीं। इस नई पहल के लिए लाइब्रेरी को बड़े पैमाने पर डोनेशन मिल रहा है। बोडलियन नाम से ही मशहूर अकादमिक पुस्तकों की बुकशॉप चेन के मालिक जूलियन ब्लैकवेल ने लाइब्रेरी को 50 लाख पाउण्ड का दान दिया है। इस रकम से लाइब्रेरी का नया हॉल बनेगा ताकि कलेक्शन तक लोगों की पहुँच को आसान बनाया जा सके। बोडलियन पुस्तकालय दुनिया का सबसे बड़ा खजाना है। इस अति महत्त्वपूर्ण कलेक्शन में 890 ईस्वी में अंग्रेजी भाषा में लिखी गई पहली सम्पूर्ण पुस्तक शामिल है। इसके अलावा आठ गुटेनबर्ग बाइबिलों में अकेली बची बाइबिल, शेक्सपियर का पहला फोलियो और फ्रैकेंस्टाइन समेत अनेक क्लासिक पुस्तकों की मूल पाण्डुलिपियाँ तथा स्पेन के राजा और रानी को सौंपा गया वह नक्शा भी है, जिस पर 1492 में नई दुनिया की खोज में निकले क्रिस्टोफर कोलंबस के साथ चर्चा की गई थी। बोडलियन लाइब्रेरी की स्थापना 1602 में हुई थी। यहाँ करीब 90 लाख वॉल्यूम्स हैं। दुनिया भर के स्कॉलर यहाँ अध्ययन के लिए आते रहे हैं। बहुत ही दुर्लभ अवसरों पर इस कलेक्शन को सार्वजनिक किया जाता है।

इंटरनेट पर संस्कृत

इंटरनेट के जरिए हिन्दी के बाद अब संस्कृत भाषा भी सर्वत्र पहुँच रही है। विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों के सामूहिक प्रयास से संस्कृत में एक ऑनलाइन पत्रिका 'विश्ववाणी' निकाली गई है। संस्कृत में ब्लागिंग भी जोर पकड़ रहा है। 'विश्ववाणी' को निकालने के लिए 'कैंपस संस्कृतम नेटवर्क' (सीएसएन) के बैनर तले भारत और अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों के छात्र एक साथ आए हैं। इस पत्रिका के माध्यम से एक परिष्कृत दुनिया के निर्माण का लक्ष्य रखा गया है। उल्लेखनीय है कि 'सीएसएन' के सदस्य बड़ी और नामी संस्थाओं से संबद्ध हैं। पिछले दो वर्षों से संस्कृत भाषा में ब्लागिंग की भी शुरुआत हो चुकी है। माइक्रोसॉफ्ट के इंजीनियर अजित कृष्णन 'कालिदास' नाम से ब्लाग चलाते हैं।

जापान में हैं सरस्वती के पाँच मन्दिर

जापान और भारत की संस्कृति तथा अध्यात्म में तादात्म्य का रिश्ता बताते हुए एक जापानी विदुषी ने कहा कि दोनों देश परम्परावादी हैं और जापान में देवी सरस्वती के पाँच मन्दिर हैं। साहित्य अकादमी में कल्चर एण्ड सोल ऑफ जापान विषय पर आख्यान देते हुए जापानी विदुषी मामी यमादा ने कहा कि जापान और भारत के बीच बड़े व छोटे भाई का रिश्ता है। भारत हमारा बड़ा भाई है और हमें अपने बड़े भाई से बहुत कुछ सीखना है।

दोनों देशों को परम्पराओं पर विश्वास करने वाला देश बताते हुए उन्होंने कहा कि जिस तरह भारत में सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा की पूजा होती है, उसी तरह जापान में भी सरस्वती के पाँच मन्दिर हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि जापानी भाषा में सरस्वती को 'बेन जेई तेन' कहा जाता है, जिसका अर्थ 'वाणी और बुद्धि की देवी' होता है।

लेखिका 2007

भारत और इजरायल ने मिलकर 3000 रुपये का 'लेखिका 2007' साफ्टवेयर निकाला है, इसमें अंग्रेजी न जानने वाले भारतीय भाषाओं को लिख पढ़ सकते हैं। भारत द्वारा निर्मित डाटाबेस से, ज्ञान की सभी विधाओं की भाषा व लिपियों में से 01.8 मिलियन को लिपिबद्ध किया गया है।

सार्वजनिक खेद प्रकाश

श्री महेन्द्र राजा जैन ने अपने वकील के माध्यम से डॉ० कान्ति कुमार जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'अब तो बात फैल गई' जिसका प्रकाशन विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी द्वारा किया गया है, के पृष्ठ 190 पर प्रकाशित 'श्री महेन्द्र राजा जैन' विषयक टिप्पणी पर एक कानूनी नोटिस भिजवाया है। हमने प्रकाशक के रूप में पुस्तक के लेखक डॉ० कान्तिकुमार जैन से इस सम्बन्ध में चर्चा की। उनका उत्तर हम ज्यों का त्यों छाप रहे हैं—

''*अब तो बात फैल गई* के पृष्ठ 190 पर श्री महेन्द्र राजा जैन के सम्बन्ध में '*अब तो बात फैल गई*' के लेखक के रूप में मैंने जो कुछ लिखा है उससे श्री महेन्द्र राजा जैन को किसी प्रकार ठेस पहुँचाना मेरा उद्देश्य नहीं था। उनका अपमान करने अथवा उनकी छवि धूमिल करने की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। मुझे दु:ख है कि श्री महेन्द्र राजा जैन ने मुझे गलत समझा, फिर भी जाने-अनजाने मेरी किसी अभिव्यक्ति, शब्द प्रयोग या टिप्पणी से उन्हें क्षोभ पहुँचा हो तो मुझे उसके लिये हार्दिक खेद है। मेरा लक्ष्य न तो उनकी छवि धूमिल करने का था और न ही उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने का। वे हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक हैं और मैं उनका हार्दिक सम्मान करता हूँ।

मैं 3 फरवरी, 2008 को श्री महेन्द्र राजा जैन को लिखे गये अपने रजिस्टर्ड पत्र में पहले ही इस सम्बन्ध में हार्दिक खेद व्यक्त कर चुका हूँ। 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से मैं सार्वजनिक रूप से श्री महेन्द्र राजा जैन को पहुँची किसी भी प्रकार की ठेस के लिये पुन: **खेद व्यक्त करता हूँ।**''

प्रो. कान्तिकुमार जैन
विद्यापुरम्, मकरोनिया कैंप
सागर - 470 004

प्रकाशक के रूप में विश्वविद्यालय प्रकाशन भी इस हेतु हार्दिक खेद व्यक्त करता है।

— अनुराग कुमार मोदी

पिज्जा डिलीवरी की तर्ज पर

लाइब्रेरीवाला

....9000 से ऊपर किताबें चुनने का मौका
....24 घण्टे में किताबों की होम डिलीवरी
....किताबों को मनचाहे दिनों तक खुद के पास रखने की आजादी।
....चंद रुपयों में लीजिए महँगी किताबों का लुत्फ।

पूरे मुम्बई में किताबें सप्लाई करने के लिए 15 लोगों की टीम बनी हुई है। ये लोग 24 घण्टे शहर में अपनी स्पेशल 'लाइब्रेरीवाला बाइक' को लेकर घूमते हैं और सदस्यों को घर पर ही किताबें उपलब्ध कराते हैं। मुम्बई की सड़कों पर इनकी बाइक को दौड़ता देखकर मैकडॉनल्ड पिज्जा सप्लाई की याद ताजा हो जाती है। जिस लगन और शिद्दत के साथ मुम्बई का एक आम डिब्बेवाला भीड़ भरी गलियों में खाना पहुँचाता है, लोगों के पेट की भूख भगाता है उसी तर्ज पर लाइब्रेरीवाला किताब पढ़ने वालों की मानसिक भूख मिटाता है। यह किताब पढ़ने-पढ़ाने का स्मार्ट तरीका है। इस भागदौड़ भरी जिन्दगी में पारम्परिक पुस्तकालय तक जाने का किसी के पास समय नहीं है ऐसे में यदि कोई चंद रुपये की सदस्यता शुल्क में आपके घर ही पुस्तकें पहुँचा दे तो इससे बड़ी बात और क्या होगी?

स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम मोदीजी : एक प्रसंग

मुझे गोरखपुर आये लगभग एक वर्ष हो गया था। उन दिनों मैं दीवान दयाराम में उपाध्यायजी के मकान में रहता था। मैं किसी काम से लखनऊ गया था। मोदीजी भी उर्मिलाजी के साथ लखनऊ गये थे। लौटने में मेरा उनका ट्रेन में साथ हो गया। उस समय 'अनुराग' लगभग 6 महीने के हो गये थे। ट्रेन रात की थी। मेल ट्रेन। 'लखनऊ' से शाम लगभग साढ़े चार बजे छूटती थी। गोरखपुर रात साढ़े दस तक आ जाती थी। ट्रेन में अनुरागजी को शौच हो गया। मैं थोड़ा घबड़ाया। सोचा, अब क्या होगा? सीट पर ही शौच? मोदीजी ने तुरन्त झोले में से रुई निकाली। शौच साफ किया। फिर नल से पानी लाए। पाँच मिनट में धो-पोंछ सब ठीक कर दिया। मेरी ओर देखकर हँसे। कहा—''तिवारीजी, बच्चे को साथ लेकर चलने पर यह सब बहुत स्वाभाविक है।'' मोदीजी कभी नर्वस नहीं होते थे। कोई समस्या छोटी हो या बड़ी, बड़ी तत्परता से उसे निपटा देते थे। छोटे-छोटे प्रसंग उनके न रहने पर प्राय: याद आते रहते हैं। इक्कीस मार्च को होलिकादाह है। 22 को होली। सोचते हुए उनकी याद आ गई। **— डॉ० रामचन्द्र तिवारी**

काशी के सशक्त हस्ताक्षर

विद्वान लेखक एवं प्राध्यापक : एक रूपरेखा

डॉ० नीरजा माधव

एम०ए० (अंग्रेजी),
पी०-एचडी०, बी०एड०,
डिप्लोमा (सितार)

[ग्राम : कोतवालपुर, पो० : मुफ्तीगंज, जिला : जौनपुर में 15 मार्च 1962 को जन्म]

अकादमिक गतिविधियाँ : एन०सी०ई०आर० टी०, राजस्थान साहित्य अकादमी, भोपाल साहित्य अकादमी, भारत भवन आदि द्वारा आयोजित राष्ट्रीय साहित्यिक गोष्ठियों में प्रतिभाग एवं पत्र-प्रस्तुति।

प्रकाशित रचनाएँ : अब तक पाँच कहानी-संग्रह, चार उपन्यास, एक कविता-संग्रह, एक पत्रकारिता पुस्तक, एक ललित निबन्ध-संग्रह प्रकाशित।

पुरस्कार/सम्मान : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'सर्जना' एवं 'यशपाल' पुरस्कार। इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय विद्वत् परिषद द्वारा 'युवा प्रतिभा सम्मान', भारतेन्दु अकादमी द्वारा 'भारतेन्दु प्रभा' आदि सम्मान प्राप्त।

क्या खोया/क्या पाया : ''खोने और पाने का सिलसिला बहुत गूढ़ है। कभी-कभी जिसे हम पाना समझ बैठते हैं, वास्तव में वह कुछ मूल्यवान खोने की शुरुआत हुआ करती है। अत: समय ही निर्धारित कर सकता है कि हमने क्या खोया और क्या पाया।''

आगामी योजनाएँ : ''रचनाकार के लिए रचना-कर्म के अतिरिक्त और दूसरी योजनाएँ अल्प-कालिक होती हैं। दीर्घकालिक तो रचना-कर्म ही है।''

महत्त्वपूर्ण संदेश : ''वैश्वीकरण के इस दौर में बाजार हमारे ऊपर हावी हो उसके पूर्व ही हम सचेत हो जाएँ और अपनी जड़ों से जीवन-रस लें, नई ऊर्जा के साथ उठ खड़े हों।''

सम्पर्क : मधुवन, सा० 14/598, सारंगनाथ कालोनी, सारनाथ, वाराणसी
फोन : 0542-2595344, 9838975270

सम्प्रति : कार्यक्रम अधिशासी, आकाशवाणी, वाराणसी (उ०प्र०)

रेडियो का कलापक्ष
डॉ० नीरजा माधव
प्रथम संस्करण : 2006
पृष्ठ : 112
सजि. : रु० 80.00 (81-7124-498-X)
अजि. : रु० 40.00 (81-7124-492-0)

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सम्मान-पुरस्कार

देवभाषा विद्वान श्रीनिवास रथ को 'विश्वभारती पुरस्कार'

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के वर्ष 2007-08 के घोषित पुरस्कारों में *दो लाख 51 हजार* राशि का शीर्षस्थ '**विश्वभारती पुरस्कार**' उज्जैन के संस्कृत विद्वान् **प्रो० श्रीनिवास रथ** को मिलेगा।

एक लाख राशि का '**महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार**' वाराणसी के **प्रो० श्रीराम पाण्डेय** व *एक लाख* राशि का '**महर्षि व्यास पुरस्कार**' के लिए दरभंगा के **प्रो० जयमंत मिश्र** का चयन हुआ है। घोषित पुरस्कारों में *51-51 हजार रुपये* के छह '**विशिष्ट पुरस्कार**' इलाहाबाद के **शिवशंकर त्रिपाठी** व **प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी**, वाराणसी के **प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय**, बागपत के **डॉ० रामकिशोर मिश्र**, कानपुर की **नलिनी शुक्ल** व लखनऊ के **डॉ० उमारमण झा** को दिये जायेंगे। *25-25 हजार रुपये* के '**विशिष्ट वेद पंडित पुरस्कार**' हेतु वाराणसी के **कृष्णमूर्ति घनपाठी** व '**वेद पंडित पुरस्कार**' हेतु **श्रीकृष्णमूर्ति वेंकटरमण** व **मनोज कुमार पाण्डेय** (वाराणसी), **संतोष पाठक** (चित्रकूट), **इन्द्रदेव मिश्र** (अयोध्या), **उपेन्द्र कुमार पांडेय** (बस्ती), **महेन्द्र कुमार पाठक** (बलिया), **श्रीनिवास पेन्यूली** (गाजियाबाद) व **शेषनाथ तिवारी** (गाजीपुर) को चुना गया है। *25-25 हजार रुपये* के नामित '**कालिदास पुरस्कार**' नई दिल्ली के **डॉ० अशोक कुमार डबराल**, '**शंकर पुरस्कार**' वाराणसी की **डॉ० इन्दुमती मिश्रा** व '**पाणिनी पुरस्कार**' हरिद्वार के **डॉ० रूपकिशोर शास्त्री** को दिया जाएगा। *ग्यारह-ग्यारह हजार* राशि के '**विशेष पुरस्कार**' **प्रो० श्री किशोर मिश्र, डॉ० संतोष मित्तल, प्रो० प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रो० बृजेश कुमार शुक्ल, डॉ० रामप्रकाश वर्णी** के अलावा **जनार्दन पाण्डेय** व **प्रो० गंगाधर पंडा** (वाराणसी) को संयुक्त रूप से दिया गया है। *पाँच-पाँच हजार* राशि के '**विविध पुरस्कार**' **डॉ० वनमाली विश्वाल, डॉ० प्रयागनारायण मिश्र, डॉ० विभा रानी दूबे, गणेशदत्त शर्मा, प्रयागदत्त चतुर्वेदी, डॉ० रामशंकर अवस्थी, डॉ० देवीप्रसाद द्विवेदी, प्रो० जयशंकरलाल त्रिपाठी, डॉ० अनन्तराम मिश्र, डॉ० हीरालाल पाण्डेय, डॉ० रेखा शुक्ल** को *पाँच-पाँच हजार* राशि के ही '**शास्त्र पुरस्कार**', लखनऊ के **ज्योतिषी राधेश्याम शास्त्री** के साथ **प्रो० राधेश्याम चतुर्वेदी, डॉ० सुधाकर मालवीय, डॉ० शंकरदत्त ओझा, डॉ० एस०के० पाण्डेय** व **गिरिजाशंकर शास्त्री** को प्रदान किये जाएँगे। '**श्रवण पुरस्कार**' **डॉ० रमेशचन्द्र जैन बिजनौर** को और '**बाल साहित्य पुरस्कार**' **डॉ० केशवराम शर्मा** (दिल्ली) व **डॉ० हरिप्रसाद अधिकारी** (वाराणसी) को मिलेगा। प्रमुख सचिव भाषा अशोक घोष ने बताया कि शीघ्र ही समारोह आयोजित कर पुरस्कार वितरित किये जाएँगे।

उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी के पुरस्कार घोषित

'**मौलाना अबुल कलाम आजाद पुरस्कार**' वर्ष 2006 के लिए **जीलानी बानो** को और वर्ष 2007 के लिए **मुख्तारुद्दीन अहमद आरजू** को दिया जाएगा। उर्दू अकादमी के '**मौलाना आजाद पुरस्कार**' में सर्वाधिक *एक लाख 11 हजार रुपये* की राशि प्रदान की जाती है। इसके साथ ही इन दोनों वर्षों में *51 हजार रुपये* का '**अदबी सेवा पुरस्कार**' लखनऊ के **प्रो० सैयद महमूदुल हसन रिजवी** को, गोरखपुर के **प्रो० अफगान उल्लाह खाँ** को और कानपुर के **जनाब नामी अंसारी** को दिया गया है। *21 हजार* का पुरस्कार अलीगढ़ के **प्रो० असगर अब्बास** को मिलेगा। उर्दू पत्रकारिता के लिए **डॉ० अजीज बर्नी** और **अशर रामनगरी** को चुना गया है। इसके अलावा 116 अन्य पुरस्कारों की घोषणा भी कर दी गयी है।

प्रभाष जोशी को शलाका सम्मान

हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने शीर्षस्थ पत्रकार **प्रभाष जोशी** को शलाका सम्मान देने की घोषणा की है। अकादमी के सचिव नानकचंद के अनुसार श्री जोशी को सम्मान स्वरूप एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपये की धनराशि, शॉल तथा प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा। हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए अकादमी का '**काका हाथरसी पुरस्कार**' युवा कवि **वेद प्रकाश 'वेद'** को दिया जाएगा। हिन्दी भाषा, साहित्य व पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए **गोपाल राय, डॉ० महेन्द्र, चंद्रकांता, डॉ० जयदेव तनेजा, निर्मल पाठक, नरेन्द्र नागदेव, डॉ० रामकिशोर द्विवेदी, शीला झुनझुनवाला, डॉ० सत्यदेव चौधरी, सुरेश तिवारी** एवं **डॉ० संतोष तिवारी** को सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र के अलावा प्रत्येक को *21-21 हजार रुपये* की राशि प्रदान की जाएगी। वर्ष 2006 में प्रकाशित 11 कृतियों को '**साहित्यिक कृति सम्मान**' से अलंकृत किया जाएगा।

इन कृतियों के रचनाकारों में **पुष्पा राही, सुनीता जैन, विकि आर्य, डॉ० असगर वजाहत, क्षमा शर्मा, डॉ० रमेश उपाध्याय, अजय नावरिया, मनोरमा जफा, डॉ० जयपाल तरंग, विमला लाल, अमित कुमार** को सम्मान स्वरूप *11 हजार रुपये* की राशि, शॉल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। अकादमी ने इस वर्ष बाल एवं किशोर साहित्य की 6 कृतियों को इस वर्ग में सम्मानित करने का निर्णय किया है जिनके लेखक **राजेन्द्र उपाध्याय, प्रवेश सक्सेना, शांति अग्रवाल, डॉ० शकुन्तला कालरा, मधु मालती जैन** हैं। प्रत्येक को *5100 रुपये*, प्रशस्ति पत्र व शॉल प्रदान किया जाएगा।

विष्णु प्रभाकर को 1 लाख रुपये की भेंट

वरिष्ठ लेखक **विष्णु प्रभाकर** (96) को हरियाणा सरकार ने सम्मान राशि के रूप में 1 लाख रुपये भेंट किए हैं। यह भेंट मुख्यमंत्री राहत कोष से दी गई है। हरियाणा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष देश निर्मोही ने गुरुवार को पीतमपुरा स्थित उनके घर जाकर यह राशि दी। इस मौके पर शहर के कई जाने-माने रचनाकार भी उपस्थित थे।

'बिस्मिल्ला खाँ' युवा पुरस्कारों की घोषणा

उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ युवा पुरस्कारों की घोषणा कर दी गयी है। संगीत नाटक अकादमी ने अपनी आम सभा की बैठक में 30 युवा कलाकारों को '**उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ युवा पुरस्कार**' देने का फैसला किया। इन कलाकारों को अप्रैल महीने में एक समारोह में पुरस्कृत किया जाएगा।

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गायन के लिए चुने गए कलाकारों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत से **संदीप हरि देशमुख** व **मीता पंडित** हैं, तो कर्नाटक शैली गायन के लिए **एस०सी० गुरुचरण** व नटसंकीर्तन के लिए **एम० मानीटोन सिंह**। संगीत वाद्ययंत्र के लिए हिन्दुस्तान शैली में सारंगी के लिए **सरवर हुसैन** व सुंदरी के लिए **भीमन्ना जाधव**, कर्नाटक शैली के संगीत वाद्य यंत्र में वॉयलिन के लिए **ए० शुभलक्ष्मी** और मृदंगम के लिए **पी० जय भास्कर** का नाम पुरस्कृत होने वालों की सूची में शामिल किया गया है। रंगमंच में अभिनय के लिए **सोहिनी सेनगुप्ता**, **राजिंदर शर्मा नानू** और **अनूप त्रिवेदी**, निर्देशन के लिए **विजय कुमार, संजीव गुप्ता** व **एम० गणेश** और रंगमंच प्रकाश व्यवस्था (लाइटिंग) के लिए **एल० इबोमाचा सिंह** व **टी० श्रीकांत** को सूची में शामिल किया गया है। पारम्परिक लोकगीत बिरहा गायन के लिए **मनू यादव** तथा **लक्ष्मी सोरी** का नाम जनजातीय नृत्य मुरिया के लिए पुरस्कृत होने वाले कलाकारों की सूची में हैं। पुरस्कृत होने वाले अन्य कलाकारों में **के० बाबू पेरुवन्नान** (केरल के थियम), **अदिति शर्मा** (राजस्थानी लोकनृत्य), **आर० भूफंग** (लोकसंगीत मेघालय) और **सी० लालरीनसियामी** (लोकनृत्य मिजोरम) शामिल हैं। शास्त्रीय नृत्य के लिए 'उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार' पाने वालों में **सी० लावण्य अनंथ** (भरतनाट्यम), **सरवरी अशोक जामेनिस** (कत्थक नृत्य) **कलामंडलम सी० षण्मुख दास** (कथककली), **एल० बीना देवी** (मणिपुरी नृत्य), **मधुस्मिता मोहंती** (ओडिसी), **यामिनी रेड्डी** (कुचिपुड़ी), **एम० देविका** (मोहिनीअट्टम) और **के०एस०आर० अनिरुद्ध** (भरतनाट्यम् संगीत-मृदंगम्) शामिल हैं।

श्री आलोक मेहता को डी०लिट्०

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने दीक्षांत समारोह में प्रतिष्ठित पत्रकार 'आउटलुक' साप्ताहिक के सम्पादक श्री आलोक मेहता को पत्रकारिता में उनके समग्र अवदान का मूल्यांकन करते हुए मानद डी०लिट्० की उपाधि प्रदान की है। इसी के साथ देश की ख्यातनाम हस्तियों— कानून के क्षेत्र की जानी-मानी हस्ती पूर्व मुख्य न्यायाधीश आर०सी० लाहोटी, वरिष्ठ कृषि शास्त्री उदयशंकर अवस्थी और प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक गोकुल उत्सव महाराज को भी डी०लिट्० की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। यह चार प्रमुख व्यक्ति इसी विश्वविद्यालय में पढ़-लिखकर बड़े हुए और इन्होंने प्रदेश ही नहीं, देश में उज्जैन का नाम रोशन किया।

श्री आलोक मेहता मूलत: बड़नगर के हैं। उन्होंने नई दुनिया, नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान में विभिन्न दायित्वों का वहन किया। श्री मेहता की पुस्तक 'पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा' को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार से नवाजा गया है। उन्हें माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के गणेशशंकर विद्यार्थी सम्मान और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वे हिन्दी के पहले सम्पादक हैं जिन्हें सम्पादकों की प्रतिनिधि संस्था एडीटर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया का अध्यक्ष चुना गया है।

श्री मधुसूदन आनन्द को 'पत्रकारिता भूषण' पुरस्कार

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने 'नवभारत टाइम्स' के सम्पादक **श्री मधुसूदन आनन्द** को पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए 'पत्रकारिता भूषण' सम्मान (वर्ष 2006) प्रदान किया है। पुरस्कार राशि दो लाख रुपये है।

डॉ० शर्मा राज्य के एकमात्र संस्कृत डी०लिट्० के रूप में, दीक्षान्त समारोह में सम्मानित

दुर्ग। छत्तीसगढ़ के जाने-माने साहित्य-संस्कृति मर्मज्ञ एवं शिक्षाविद् आचार्य **डॉ० महेशचन्द्र शर्मा** को पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा आयोजित गरिमामय दीक्षान्त समारोह में डी० लिट्० से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि भारत के प्रसिद्ध परमाणु वैज्ञानिक पद्मभूषण डॉ० अनिल काठोडकर, अध्यक्ष राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री ई०एस०एल० नरसिम्हनजी एवं अतिविशिष्ट अतिथि मुख्यमंत्री डॉ० रमन सिंहजी की उपस्थिति में संस्कृत साहित्य में मौलिक एवं परिणामदायी सर्वोच्च शोध उपाधि से विभूषित होने वाले आचार्य डॉ० शर्मा छत्तीसगढ़ राज्य के पहले व्यक्तित्व हैं।

वनमाली स्मृति कथा पुरस्कार उदय प्रकाश को

वनमाली स्मृति कथा पुरस्कार समकालीन कथा परिदृश्य में जनतांत्रिक एवं मानवीय मूल्यों की तलाश में लगे कथा साहित्य की पुनर्प्रतिष्ठा करने एवं उसे सम्मान प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित द्विवार्षिक पुरस्कार हैं। वर्ष 2008 के इस पुरस्कार के लिये चर्चित कथाकार **उदय प्रकाश** का चयन किया गया है। उदय प्रकाश ने कहानी के नये प्रतिमान रचे हैं।

डॉ० स्नातक स्मृति सांस्कृतिक शिखर सम्मान

विगत 9 फरवरी को नई दिल्ली के साहित्य अकादेमी सभागार में स्व० प्रो० विजयेंद्र स्नातक की पावन स्मृति में सांस्कृतिक शिखर सम्मान का प्रथम आयोजन किया गया। शिखर सम्मान साहित्य, कला, संगीत और रंगमंच में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए गए। प्रत्येक सम्मान में अंगवस्त्र, प्रमाण-पत्र, अनुशंसा-पत्रक और स्मृति-चिह्न के अतिरिक्त *ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये* भी दिए गए। साहित्य के लिए प्रख्यात गीतकार **श्री बालस्वरूप राही**, कला व तकनीक के लिए प्रखर ध्वनिवेत्ता **श्री वसंत दवे**, संगीत के लिए जाने-माने संगीतज्ञ **श्री एच०के० नवल** और रंगमंच के लिए विख्यात रंगकर्मी **श्री अरविन्द गौड़** को पुरस्कृत किया गया।

श्री कमलकांत सक्सेना को वर्ष 2008 का आंचलिक लेखक सम्मान

मध्यप्रदेश लेखक संघ की शिवपुरी इकाई के तत्वावधान में आयोजित आंचलिक साहित्यकार सम्मेलन में शिवपुरी (करैरा) निवासी एवं भोपाल प्रवासी वरिष्ठ कवि रचनाकार पत्रकार तथा मासिक साहित्यकार सागर पत्रिका के प्रधान सम्पादक **श्री कमलकांत सक्सेना** को मध्यप्रदेश लेखक संघ, भोपाल द्वारा **आंचलिक साहित्यकार सम्मान वर्ष 2008** से अलंकृत किया गया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा महावीरप्रसाद द्विवेदी नामित पुरस्कार

गोला गोकर्णनाथ। संस्कृत-हिन्दी के जाने-माने साहित्यकार **डॉ० अनन्तराम मिश्र 'अनन्त'** के ललित निबन्धों की पुस्तक 'बोलती नदियाँ' पर 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' ने **'महावीर प्रसाद द्विवेदी नामित पुरस्कार'** घोषित किया है जो 18 से 30 मार्च 2008 तक सम्भावित, किसी तिथि पर होने वाले सम्मान-समारोह में दिया जायेगा। 'बोलती नदियाँ' पुस्तक में गंगा, यमुना, सरस्वती, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, शिप्रा, चर्मण्वती और कावेरी की सांस्कृतिक जीवन यात्रा की आत्मकथात्मक शैली में लालित्यपूर्ण प्रस्तुति है।

विश्व मोहन तिवारी को डॉ० गार्गी गुप्त द्विवागीश पुरस्कार

पिछले दिनों इण्डिया हैबिटेट सेण्टर में एयर वाइस मार्शल **विश्व मोहन तिवारी** (से०नि०) को 'डॉ० गार्गी गुप्त द्विवागीश पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

प्रसिद्ध संस्था भारतीय अनुवाद परिषद प्रतिवर्ष उन दो श्रेष्ठ अनुवादकों को सम्मानित करती है जिन्होंने अनुवाद को सर्जनात्मक साहित्य की गरिमा प्रदान करने तथा अनुवाद कला के नए प्रतिमान स्थापित करने का कार्य किया है।

त्रयोदश भाऊराव देवरस सम्मान समारोह 2007-08

लखनऊ स्थित भाऊराव देवरस सेवा न्यास के तत्त्वावधान में न्यायमूर्ति एच०एन० तिलहरी की अध्यक्षता में आयोजित त्रयोदश सेवा सम्मान समारोह 2007-08 में धामपुर के **डॉ० हरीशचन्द्र आत्रेय** तथा केरल के **डॉ० नारायणन वी०** को चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए **'भाऊराव देवरस सेवा सम्मान'** से सम्मानित किया गया। सभी को सम्मान स्वरूप श्रीफल, 51 हजार रुपये की धनराशि के साथ अंगवस्त्र, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न एवं साहित्य प्रदान किया गया।

डॉ० विजयवर्गीय को 'साहित्य मनीषी' उपाधि

24 फरवरी को राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार **डॉ० दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'** को भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत द्वारा अकादमी का सर्वोच्च *51 हजार रुपये* का पुरस्कार तथा 'साहित्य मनीषी' की उपाधि प्रदान की गई।

मृदुला गर्ग व नुज्हत हसन सम्मानित

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में हिन्दी भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में वुमन डेवलेपमेंट एण्ड एन्वायरमेंट फाउण्डेशन ने उत्कृष्ट योगदान के लिए दिल्ली समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती मोतिया गर्ग, साहित्यकार एवं चिंतक श्रीमती मृदुला गर्ग, नेशनल बुक ट्रस्ट की निदेशक नुज्हत हसन और प्रख्यात समाज-सेविका श्रीमती प्रीति मोंगा को सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्यकार डॉ० शेरजंग गर्ग ने की।

डॉ० विनय पाठक सम्मानित

17 फरवरी को रायपुर में लघुकथाओं पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के अन्तर्गत सृजन सम्मान के उपक्रम में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ० रमन सिंह के द्वारा दलित-विमर्श पर मिनी माता की स्मृति में प्रख्यात समीक्षक एवं भाषाविद् **डॉ० विनयकुमार पाठक** को सम्मानित किया गया। इस

अवसर पर दलित-चिंतन पर 'बयान' के सम्पादक श्री मोहनदास नैमिशराय भी सम्मानित किए गए।

ललित कला अकादमी के पुरस्कार घोषित

ललित कला अकादमी ने 50वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी के अवसर पर 12 कलाकारों को राष्ट्रीय पुरस्कार देने की घोषणा की है। इन्हें ये पुरस्कार 26 मार्च को शासकीय संग्रहालय सभागार, चण्डीगढ़ में दिए जाएँगे। राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वालों में असीम पाल, विजयकुमार बसाक, बी सुधीर बाशा, डिंपल बी शाह, यति जायसवाल, विपिन यादव, विपुल कुमार, षण्मुख सुंदरम, एन रामचंद्रन, मिथुन कुमार दत्ता, मजहर इलाही और ज्योर्तिमय डे शामिल हैं।

विवेकानंद सेवा सम्मान

स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रवर्तित सेवा एवं संस्कार के कार्य को अपने जीवन का व्रत बनाकर स्वयं को समर्पित कर देने वाले कार्यकर्ता अथवा संगठन के महत् प्रयासों को सम्भावित करने के उद्देश्य से कोलकाता स्थित श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय द्वारा प्रतिवर्ष 'विवेकानंद सेवा सम्मान' प्रदान किया जाता है। इस वर्ष यह सम्मान केरल निवासी **श्री एम०ए० कृष्णन्** को महाजालिसदन कोलकाता में आयोजित भव्य समारोह में पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ० मुरलीमनोहर जोशी ने मानपत्र एवं इक्यावन हजार रुपये की सम्मान राशि के साथ प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात उद्योगपति श्री वेणुगोपाल बांगड़ ने की।

डॉ० रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान

उन्नयन पत्रिका के तत्वावधान में, वर्ष 2007 का डॉ० रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान निर्णायक समिति ने बहुमत से उदीयमान ख्यातिलब्ध आलोचक **डॉ० जितेन्द्रकुमार श्रीवास्तव** को देने का निर्णय लिया है। यह सम्मान उन्हें आने वाले दिनों में 'केदार सम्मान' के अवसर पर हो रहे आयोजन में बाँदा में प्रदान किया जायेगा।

प्रो० रेखा चतुर्वेदी सम्मानित

गोरखपुर की प्रतिष्ठित साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'अमृत कलश' द्वारा लोक साहित्य में योगदान देने के लिए **प्रो० रेखा चतुर्वेदी** (प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, वि०वि० गोरखपुर) को वर्ष 2008 के लिए सम्मानित किया गया।

विनय उपाध्याय सम्मानित

सुप्रसिद्ध पत्रकार, कला चिंतक तथा उद्घोषक **श्री विनय उपाध्याय** (भोपाल) को उनकी सृजनात्मक उपलब्धियों के लिए भोपाल में आयोजित एक समारोह में ग्रेमी अवार्ड प्राप्त प्रख्यात संगीतकार पं० विश्वमोहन भट्ट ने सम्मानित किया। लगभग दो दशकों से सांस्कृतिक रचनाधर्मिता में संलग्न श्री उपाध्याय को हाल ही में खरगोन की संस्था 'विविधा' ने अपने सालाना उत्सव में 'निमाड़ अर्चन' सम्मान देने की घोषणा भी की है। उल्लेखनीय है कि श्री विनय पूर्व में श्रेष्ठ सम्पादन के लिए माधवराव सप्रे समाचार पत्र तथा शोध संस्थान द्वारा रामेश्वर गुरु पुरस्कार, कला समीक्षा के लिए रंग आधार सम्मान, जन परिषद भोपाल द्वारा 'मैन ऑफ द मीडिया' सहित लगभग एक दर्जन सम्मान तथा उपाधियों से विभूषित किए जा चुके हैं।

विभिन्न पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

साहित्य अकादमी

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल

परिषद की पुरस्कार योजना के अन्तर्गत वर्ष 2006 के पुरस्कारों के लिए 1 जनवरी 2006 से 31 दिसम्बर 2006 और वर्ष 2007 के पुरस्कारों के लिए 1 जनवरी 2007 से 31 दिसम्बर 2007 में प्रकाशित पुस्तकें आमंत्रित हैं, पुरस्कार और विषय इस प्रकार हैं—

(अ) अखिल भारतीय पुरस्कार (*प्रत्येक रु० 25,000/-*) : माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार (निबंध), गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार (कहानी), वीरसिंह देव पुरस्कार (उपन्यास), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार (आलोचना), पं० भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार (कविता)।

(ब) प्रादेशिक पुरस्कार (*प्रत्येक रु० 21,000/-*) : पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार (उपन्यास), सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार (कहानी), श्रीकृष्ण सरल पुरस्कार (कविता), आचार्य नंददुलारे बाजपेयी पुरस्कार (आलोचना), हरिकृष्ण प्रेमी पुरस्कार (नाटक/एकांकी), शरद जोशी पुरस्कार (आत्मकथा/संस्मरण), दुष्यंत कुमार पुरस्कार (प्रदेश के लेखक की पहली कृति), ईसुरी पुरस्कार (लोकभाषा विषयक), जहूर बख्श पुरस्कार (बाल साहित्य), ताम्बे पुरस्कार (मराठी साहित्य की सम्पूर्ण सर्जनात्मक विधाएँ)।

अकादमी कार्यालय में पुस्तकें प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल 2008 है।

प्रत्येक पुरस्कार के लिए पुस्तक की पाँच प्रतियाँ भेजनी होंगी। पैकेट पर पुरस्कार नाम अवश्य लिखें। पुस्तकें निदेशक, साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मुल्लारमूजी, संस्कृति भवन, बाणगंगा चौराहा, भोपाल-462003 के पते पर भेजें एवं विस्तृत जानकारी हेतु इसी पते पर सम्पर्क करें।

प्रतिष्ठित जमनालाल बजाज पुरस्कार 2008 के लिये प्रविष्टियाँ आमंत्रित

स्व० श्री जमनालाल बजाज की स्मृति में जमनालाल बजाज फाउण्डेशन, मुम्बई द्वारा सन् 1978 से लगातार पुरस्कार प्रदान किये जाते रहे हैं। फाउण्डेशन प्रतिवर्ष 3 पुरस्कार भारतीय व्यक्तियों को ग्राम-विकास हेतु विज्ञान एवं टेक्नालॉजी के व्यावहारिक उपयोग तथा बालकल्याण व महिला उद्धार के क्षेत्र में प्रशंसनीय योगदान के लिये एवं एक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार विदेशों में गाँधीवादी मूल्यों का प्रसार करने वाले भारतीय नागरिक को प्रदान करता है। पुरस्कार के रूप में प्रशस्ति-पत्र, ट्रॉफी तथा पाँच लाख रुपये की राशि प्रत्येक चयनित व्यक्तित्व को प्रदान की जाती है। इस पुरस्कार हेतु नामांकन/प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तिथि 31 मार्च, 2008 थी। अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तारीख 30 अप्रैल, 2008 निर्धारित है।

श्रीमती रत्न शर्मा स्मृति पुरस्कार

डॉ० रत्नलाल शर्मा स्मृति न्यास, दिल्ली, चौदहवें 'श्रीमती रत्न शर्मा स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार', वर्ष 2008 के लिए रचनात्मक हिन्दी बाल साहित्य—कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि की कृति आमंत्रित करता है। पुरस्कार स्वरूप 31 हजार रुपये, प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति-चिह्न प्रदान किया जाएगा। पुस्तक की चार प्रतियाँ 30 मई, 2008 तक न्यास कार्यालय महासचिव, डॉ० रत्नलाल शर्मा स्मृति न्यास, 306-308, तृतीय तल, सुषमा टॉवर, डी-ब्लॉक, सेण्ट्रल मार्केट, प्रशांत विहार, दिल्ली-85 पर भेजी जा सकती हैं।

पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी

पूर्वोत्तर भारत की शैक्षिक एवं साहित्यिक संस्था 'पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी' द्वारा 7वें स्थापना दिवस के अवसर पर 23 नवम्बर, 2008 को शिलांग में आयोजित अभिनन्दन समारोह हेतु हिन्दी लेखकों से किसी भी विधा में प्रकाशित पुस्तकों की एक-एक प्रति, फुटकर रचनाओं की फोटो कॉपी, साहित्यिक योगदान का विस्तृत विवरण, छाया चित्र, अपना पता एवं डाक टिकट युक्त दो लिफाफे सहित 31, जुलाई 2008 तक सचिव, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, रेडियो कॉलोनी, प्रो० रिंजा, शिलांग-793 006 (मेघालय) को भेज सकते हैं।

राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान

दस हजार रुपये का 'राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान' जनवरी, 2003 से दिसम्बर 2008 के मध्य प्रकाशित 'संस्मरण' एवं 'यात्रावृत्त' की एक-एक मौलिक कृति को दिया जाएगा। लेखक अपनी कृति की तीन प्रतियाँ 30 अप्रैल, 2007 तक संयोजक, राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान, संस्कृति भवन, राजेन्द्रनगर, लखनऊ-226004 पर भेज सकते हैं।

विश्वभारती पुरस्कार

वाराणसी। जंगमबाड़ी स्थित ज्ञान सिंहासन पीठ के संस्थापक आचार्य जगद्गुरु विश्वाराध्य की जयन्ती महोत्सव समारोह में **श्री विश्वाराध्य विश्वभारती पुरस्कार** इस वर्ष नांदेड़, महाराष्ट्र के विद्वान **पं० चन्द्रशेखर महाराज देगलूरकर** को देने की घोषणा की गयी। 25,001 रुपये की राशि वाला यह पुरस्कार उन्हें 28 मार्च को उस्मानाबाद, महाराष्ट्र में विशेष समारोह में प्रदान किया गया।

प्रो० रामू को पुरस्कार

प्रख्यात वायलिन वादक **प्रो० रामू शास्त्री** को दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में राष्ट्रपति ने **संगीत अकादमी पुरस्कार** से पुरस्कृत किया। 25 फरवरी को मिले इस सम्मान के अन्तर्गत प्रो० शास्त्री को 50 हजार रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्रम व ताम्रपत्र दिए गए।

तीसरी बार मिला राजभाषा पुरस्कार

भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक **डॉ० ए०के० पाण्डेय** को उनकी लिखी पुस्तक 'पत्ती वाली सब्जियों' के लिए वर्ष 2005-06 के '**राजभाषा पुरस्कार**' से सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें प्रशस्ति पत्र व 20 हजार रुपये प्रदान किए गए।

राष्ट्रपति द्वारा प्रो० गंगादत्त शास्त्री सम्मानित

नई दिल्ली। विगत दिनों राष्ट्रपति भवन में आयोजित राष्ट्रीय सम्मान समारोह में संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान **प्रो० गंगादत्त शास्त्री** को सम्मानित किया गया जिसमें उन्हें एक लाख रुपया नगद, एक शॉल तथा एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इसके साथ ही 50,000 रुपये वार्षिक की सम्मानीय पुरस्कार राशि भी उन्हें मानदेय के रूप में आजीवन प्रदान की जायेगी।

यह समारोह संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी, फारसी, उर्दू तथा कम्प्यूटर विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वानों को समर्पित था। इसमें पूरे देश में बोली जाने वाली भाषाओं सहित अन्य विषयों के 30 विद्वानों को राष्ट्रीय सम्मान से पुरस्कृत किया गया।

डॉ० अर्जुन तिवारी विजिटिंग प्रोफेसर नियुक्त

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ पत्रकारिता विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ० अर्जुन तिवारी को राँची विश्वविद्यालय में खुले पं० रामजी मिश्र मनोहर पत्रकारिता पीठ का विजिटिंग प्रोफेसर तथा हेड नियुक्त किया गया। किसी समर्पित पत्रकार के नाम पर स्थापित होने वाला यह पहला पीठ है, जिसके जरिये उच्च अध्ययन शोध एवं प्रोजेक्ट कार्य होंगे। डॉ० तिवारी इसके पहले विद्यापीठ, मुजफ्फरपुर, चित्रकूट, बिलासपुर, इलाहाबाद में पत्रकारिता विभाग के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा चुके हैं। पत्रकारिता पर उनकी 22 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

स्मृति-शेष

डॉ० सिद्धेश्वरनाथ का देहावसान

सूर-स्मारक मंडल के महामंत्री एवं 'सूर-सौरभ' पत्रिका के प्रधान सम्पादक **डॉ० सिद्धेश्वरनाथ श्रीवास्तव** (95 वर्ष) का देहावसान हिन्दी-प्रेमियों के लिये शोकप्रद रहा। हिन्दी-भाषा और साहित्य की सेवा और प्रचार-प्रसार के साथ वे स्वतंत्रता सेनानी भी रहे। उनकी अंत्येष्टि, उनकी कर्मस्थली सूरकुटी, गऊघाट, रूनकता पर की गयी, जहाँ उन्हें स्वातंत्र्य-सेनानी के रूप में 'गॉर्ड ऑफ आनर' दिया गया।

वरिष्ठ पत्रकार श्रीमती विनयपुरी पांडेय का निधन

वाराणसी की वरिष्ठ पत्रकार **श्रीमती विनयपुरी पांडेय** (52 वर्ष) का हृदयाघात के कारण आकस्मिक निधन हो गया। श्रीमती पुरी सरल, मृदुभाषी एवं कर्मठ महिला थीं। उनके अचानक देहावसान की खबर सुनकर पत्रकार-जगत स्तब्ध हो गया। हिन्दी पत्रकार समुदाय और मीडिया के लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि प्रदान की।

वरिष्ठ गीतकवि श्री ब्रजमोहन सिंह ठाकुर का निधन

हिन्दी गीत के प्रति आजीवन समर्पित रहे कवि **श्री ब्रजमोहन सिंह ठाकुर** का पहली जनवरी 08 को उनके गृहनगर बाबई (होशंगाबाद) म०प्र० में दु:खद निधन हो गया। वह लम्बे समय से श्वास रोग से पीड़ित थे। उनके अनेक गीत-गजल संग्रह प्रकाशित हुए हैं और कुछ प्रकाशनाधीन हैं।

नहीं रहे शायर नक्श इलाहाबादी

फाफामऊ (इलाहाबाद)। मशहूर शायर **नक्श इलाहाबादी** नहीं रहे। वह लगभग सत्तर वर्ष के थे। इलाहाबाद से 17 किलोमीटर दूर थरवई के जगदीशपुर पूरेचंदा गाँव के मूल निवासी नक्श इलाहाबादी का पूरा नाम मोहम्मद हनीफ था। रचनाधर्मिता के लिए वर्ष 1974 में उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार मिला था। इसके बाद तो वर्ष 1976 तथा 1977 में कानपुर में आयोजित मुशायरे के दौरान जिलाधिकारी से सम्मान, साहित्यश्री, अभिनव साहित्य परिषद सम्मान सहित कई अन्य सम्मान भी मिले। वर्ष 2001 में मित्र संगम संस्था की ओर से भी उनके साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया गया था।

श्री गोपालदास का निधन

हिन्दी के वयोवृद्ध लेखक और प्रसारक **श्री गोपालदास** (93 वर्ष) ने जयपुर में अन्तिम साँस ली। 'जीवन की धूप छाँव' उनकी महत्त्वपूर्ण कृति है। वे लम्बे समय तक आकाशवाणी से जुड़े रहे। सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें प्रोड्यूसर (एमेरिट्स) के सम्मान से सम्मानित किया गया था। उनकी हिन्दी सेवा को हमारा प्रणाम।

श्री कमलापति खत्री का असामयिक निधन

'लहरी प्रकाशन', वाराणसी के संचालक/प्रकाशक **श्री कमलापति खत्री** (72 वर्ष) का असामयिक निधन एक साहित्य-परम्परा का अवसान सिद्ध हुआ। वे प्रसिद्ध लेखक बाबू देवकीनन्दन खत्री के पौत्र और वैज्ञानिक कथाकार दुर्गाप्रसाद खत्री के पुत्र थे। प्रकाशन-व्यवसाय से जुड़े रहकर भी वे गम्भीर अध्येता, लेखक और सांस्कृतिक रुचि से सम्पन्न विशुद्ध बनारसी व्यक्ति थे।

अभिनेता-निर्देशक श्री अवधबिहारीलाल 'सोना बाबू' का देहावसान

वाराणसी के सांस्कृतिक क्षेत्र में रंगमंच से अपनी कलाभिव्यक्ति करने वाले वरिष्ठ अभिनेता-निर्देशक **श्री अवधबिहारीलाल 'सोना बाबू'** (82 वर्ष) का देहावसान एक नाट्य परम्परा का अवसान बन गया। श्री नाट्यम् और अनुपमा जैसी सोना बाबू द्वारा संचालित संस्थाएँ तो कालकवलित हो गयीं किन्तु अभी भी उनके जय सोमनाथ, गोदान, आधे-अधूरे, अंधायुग, पगला घोड़ा जैसे नाट्य-प्रयोग चर्चा का विषय बनते हैं।

श्री उपेन्द्र वाजपेयी नहीं रहे

वरिष्ठ पत्रकार श्री उपेन्द्र वाजपेयी का 17 फरवरी 2008 को निधन हो गया। वे 86 वर्ष के थे। श्री वाजपेयी को पत्रकारिता के संस्कार विरासत में मिले। वे सम्पादकाचार्य पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के ज्येष्ठ पुत्र थे। श्री उपेन्द्र वाजपेयी ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और लगभग तीन वर्ष का समय कारावास में बिताया। हिन्दी दैनिक काशी के 'आज' और लखनऊ के 'स्वतंत्र भारत' के विशेष संवाददाता रहे श्री उपेन्द्र वाजपेयी ने 22 वर्ष तक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के राजनीतिक संवाददाता का दायित्व निभाया। सन् 1977 में श्री उपेन्द्र वाजपेयी दिल्ली यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट के अध्यक्ष चुने गए थे।

उमाशंकर शास्त्री 'मंजुल' नहीं रहे

हिन्दी-संस्कृत के विद्वान् आचार्य व जनता इण्टर कॉलेज, दानपुर (बुलंदशहर) के सेवा-निवृत्त संस्कृत प्रवक्ता **श्री उमाशंकर शास्त्री 'मंजुल'** का गत 8 फरवरी को निधन हो गया। 15 अक्टूबर, 1936 को सिरसा कलाँ, पो० रहरा (मुरादाबाद) में जनमे उमाशंकरजी ने 'गंगा-कोप', 'बदलते स्वर', 'पंचामृत', 'वाल्मीकि रामायण सुन्दर काण्ड' (संस्कृत में रूपांतर), 'मैं भारत हूँ', 'जी, मैं गांधी बोल रहा हूँ' तथा 'शारदा-शतकम्' जैसी काव्य-कृतियाँ हिन्दी एवं संस्कृत काव्य-संसार को दीं।

संगोष्ठी/लोकार्पण

तृतीय हिन्दी भाषा कुंभ

इस वर्ष मार्च के पहले सप्ताह में (1-2-3 मार्च) मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् एवं अखिल कर्नाटक हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा बैंगलूरु स्थित ज्ञान ज्योति ऑडिटोरियम के सभागार में देश-विदेश के विद्वान हिन्दी लेखकों-साहित्यकारों की उपस्थिति और भागीदारी के साथ तृतीय हिन्दी भाषा कुंभ सम्पन्न हुआ। उद्घाटन राज्यसभा के उपसभापति माननीय श्री के रहमान खान द्वारा तथा अध्यक्षता छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल श्री ई०एस०एल० नरसिम्हन ने की। तीन दिनों के इस कुंभ में 8 विचार सत्र और एक खुला सत्र आयोजित किया गया जिसमें 21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों के बीच हिन्दी-भाषा के साहित्य-सृजन, अनुवाद अंतर्प्रान्तीय संबंध, प्रशासनिक-प्रयोग, संचार-माध्यमों और प्रौद्योगिकी की तकनीकी शब्दावली में प्रयोग की समस्याएँ, दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार आदि विषयों पर विद्वान-वक्ताओं ने शोध-परक विचार प्रस्तुत किये। समापन एवं सम्मान समारोह की अध्यक्षता कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुर ने की। मुख्य अतिथि थे महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति डॉ० नामवर सिंह।

कविता कैसे पढ़ें ?

इसी महीने के दूसरे सप्ताह में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एकेडमिक स्टॉफ कॉलेज में प्रख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने बताया—'कविता कैसे पढ़ें'। वस्तुत: कविता संवेदना से ही उपजती है इसलिए वह संवेदनाओं को केवल उभारती ही नहीं बल्कि व्यक्ति को संवेदनशील बनाती है। डॉ० सिंह ने जयशंकरप्रसाद की कविता 'आत्मकथा' का काव्यपाठ करते हुए कविता के भाव, उच्चारण और ध्वनि के साम्य का निरूपण किया। इन दिनों हिन्दी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में जिस 'भावयित्री-प्रतिभा' का अभाव हो चला है उसे पुनर्-संजीवन प्रदान करने की दृष्टि से डॉ० नामवर सिंह का यह भाषण स्मरणीय रहेगा।

पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह

श्रीनाथद्वारा, राजस्थान के साहित्य मण्डल के तत्वावधान में 28-29 फरवरी को श्रीनाथजी के पाटोत्सव के अवसर पर ब्रजभाषा समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सर्वाभिनंदन, पुरजन-सम्मान, काल-कवलित पत्रिका प्रदर्शनी, अष्टछाप कवि कक्ष प्रदर्शनी आदि के साथ समस्यापूर्ति और ब्रजभाषा कवि-सम्मेलन के आयोजन द्वारा परम्परा का सातत्य दिखलायी पड़ा।

देवनागरी-परिचर्चा

विगत 23 फरवरी के दिन नागरी लिपि परिषद्, गाँधी स्मारक निधि, नई दिल्ली के सौजन्य से महादेवी वर्मा सृजन पीठ, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, रामगढ़ द्वारा नैनीताल के डी०एस०बी० परिसर स्थित हिन्दी-विभाग में 'देवनागरी लिपि : समस्याएँ एवं समाधान' विषय पर विद्वानों ने विचार प्रस्तुत किये। संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता हिन्दी विद्वान और भाषाविद् डॉ० केशवदत्त रूवाली ने विषय की व्यापकता को रेखांकित करते हुए कहा कि भाषा का सम्बन्ध सीधे जीवन के साथ होता है जबकि लिपि का सम्बन्ध सभ्यता के विकास के साथ जुड़ा है। डॉ० रूवाली ने देवनागरी लिपि की ध्वनिपरक वैज्ञानिकता को स्पष्ट करते हुए उसकी तकनीकी स्वायत्तता पर जोर दिया और कहा कि इस काम के लिए कम्प्यूटर और दूसरे संचार साधनों में भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया जाये ताकि मानविकी, विज्ञान और तकनीक के प्रत्येक क्षेत्र में देवनागरी-लिपि की प्रतिष्ठा हो सके एवं भाषा सुसमृद्ध बने। भारत के दक्षिण और उत्तर की सभी भाषाओं के साहित्य का भी यदि नागरी-लिप्यंतरण प्रकाशित हो जाये तो हमारी राष्ट्रीय पहचान और मजबूत होगी।

हिन्दी-जापानी साहित्य चर्चा

जापान के ताकुशोक विश्वविद्यालय, तोक्यो में विश्व साहित्य के ऐतिहासिक विकास को रेखांकित करते हुए जापानी साहित्य के अध्येता-समालोचक प्रो० सुजुकी सादमी ने कहा कि साहित्य का इतिहास अनेक स्रोतों से प्रभावित होता है। इन स्रोतों में मौखिक-स्रोतों को व्यवस्थित करना और उन्हें इतिहास लेखन का आधार बनाना महत्त्वपूर्ण है। जापानी और भारतीय साहित्य में पारम्परिक और बौद्ध मत से प्रभावित जो मिथक रहे हैं, उन्होंने हमेशा विचार-विमर्श की प्रक्रिया को प्रभावित किया है। भारत की ओर से कवि और विचारक अशोक वाजपेयी, गंगाप्रसाद विमल, मंगलेश डबराल, सुरेश सलिल, प्रयाग शुक्ल, रणजीत साहा ने और जापान के साहित्य-अध्येताओं ने द्वि-दिवसीय परिचर्चा में अपने पत्र प्रस्तुत करते हुए संगोष्ठी को सार्थकता प्रदान की। इस कार्यक्रम के आरम्भ में 'विश्व साहित्य : चुनिंदा रचनाएँ' शीर्षक पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

हिन्दी भाषा : हिन्दी शिक्षक

'हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी शिक्षक की भूमिका' विषय पर हिन्दी प्रचार समिति द्वारा आन्ध्र प्रदेश के महबूब नगर जिला नारायणपेट में आयोजित संगोष्ठी में दक्षिण-भारत के हिन्दी-शिक्षकों ने हिन्दी भाषा के प्रशिक्षण और प्रचार-प्रसार पर गम्भीर विचार-विमर्श किया। वक्ताओं का मानना था कि भाषा और संस्कृति में गहरा सम्बन्ध होता है। हिन्दी-भाषा भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। इस सांस्कृतिक-पहचान के लिये हिन्दी का प्रसार आवश्यक है।

भूमंडलीकरण और साहित्य

दिल्ली स्थित दयालसिंह कॉलेज में 'भूमंडलीकरण साहित्यिक आलोचना और समाज' पर दो दिनों तक वैचारिक बहस का माहौल गर्म रहा। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में वरिष्ठ आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि साहित्य को सुधारने से पहले मनुष्य को सुधारना मेरा लक्ष्य है। संगोष्ठी के अध्यक्ष प्रो० नित्यानंद तिवारी ने भूमंडलीकरण के खतरों, सीमाओं और उपलब्धियों का विश्लेषण करते हुए व्यक्ति, समाज और इतिहास के साथ उसके संबंधों को स्पष्ट किया।

लोकगाथाओं का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

विषय को केन्द्र में रखकर नेशनल बुक ट्रस्ट एवं साहित्यिक संस्था विकल्प की ओर से दरभंगा में दो दिवसीय संगोष्ठी एवं रचना पाठ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित नौ पुस्तकों तथा प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित एक मैथिली पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम में डॉ० रत्नेश्वर मिश्रा, डॉ० अजीतकुमार वर्मा, खगेन्द्र ठाकुर, भगवान सिंह, कुलानंद झा जैसे प्रतिष्ठित साहित्यविद्-विचारक उपस्थित थे।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशती

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशती के अवसर पर उनके जन्मक्षेत्र बलिया में विभिन्न संस्थानों द्वारा आयोजन किये गये। प्रथमत: बलिया हिन्दी प्रचारिणी सभा द्वारा तीन सत्रों में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न किये गये। प्रथम सत्र में आयोजित संगोष्ठी में 'आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि और उनका साहित्य' विषय पर विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। द्वितीय सत्र में डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी और डॉ० प्रमोदकुमार सिंह को क्रमश: 'आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी स्मृति-सम्मान 2007' एवं 'डॉ० भगवतशरण उपाध्याय स्मृति-सम्मान 2007' प्रदान किये गये। तृतीय सत्र में काव्य गोष्ठी आयोजित की गयी।

इसी श्रृंखला में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान परिषद द्वारा बलिया में ही एक तीन दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एनसीईआरटी द्वारा आचार्यजी पर तैयार किये गये वृत्तचित्र का लोकार्पण और प्रदर्शन भी किया गया।

छठा अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी-उत्सव

अक्षरम् ने नई दिल्ली के इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर और हिन्दी भवन में अपने छठे अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी-उत्सव का आयोजन किया। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद और साहित्य अकादमी की सक्रिय भागीदारी के साथ

इस आयोजन के विभिन्न सत्रों में आमंत्रित विद्वानों ने भाषायी समन्वय, वैश्वीकरण के दौर में मीडिया, हिन्दी और प्रौद्योगिकी, तुलसी साहित्य की विश्व व्यापकता जैसे विषयों पर विचार-विमर्श किये। पत्र पढ़े गये, समालोचनाएँ हुईं। इस अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी उत्सव में देश-विदेश के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया और कवि गोष्ठी में कविताएँ पढ़ीं। इस अवसर पर देश-विदेश के हिन्दी के 18 विद्वानों को अलग-अलग क्षेत्र में हिन्दी-सेवा के लिये 'अक्षरम् शिखर-सम्मान' प्रदान किया गया। इस क्रम में डॉ० कृष्णकुमार द्वारा सम्पादित पुस्तक 'सूरज की सोलह किरणें' का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ। समग्र कार्यक्रम का संयोजन श्री अनिल जोशी और समन्वय श्री नरेश शांडिल्य ने किया।

संस्कृति और समन्वय

वाराणसी। संस्कृति और समन्वय विषय पर पं० विद्यानिवास मिश्र की स्मृति को सँजोते हुए विद्याश्री न्यास द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। परिस्पंद में आयोजित इस गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए डॉ० युगेश्वर ने पण्डितजी के व्यक्तित्व को रेखांकित किया और स्पष्ट किया कि पण्डितजी अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व में आक्रामक नहीं बल्कि समन्वयकारी हैं। इस संगोष्ठी को डॉ० राय आनंदकृष्ण, आचार्य शिवजी उपाध्याय, नीरजा माधव, श्रीप्रकाश शुक्ल आदि ने सम्बोधित किया। गोष्ठी का संचालन डॉ० बलराज पाण्डेय ने किया।

लेखक बुनियादी उसूलों पर आज भी टिका हुआ है—विष्णु नागर

भोपाल। ''समाज में बहुत सारे परिवर्तन होते हैं। लेखक इनसे अछूता नहीं रहता। अच्छे और बुरे बदलावों के इस दौर में भी लेखक कुछ बुनियादी उसूलों पर टिका हुआ है। तमाम कठिनाइयों के बावजूद आज भी वह सेक्युलर राह पर चल रहा है। शीर्ष ऐतिहासिक उपन्यासकार स्वर्गीय अम्बिकाप्रसाद दिव्य का समग्र लेखन पढ़ने के पश्चात् यह बात स्थापित होती है। दिव्यजी के बहुआयामी साहित्य और कला को देखकर आश्चर्य होता है।'' ये विचार हैं प्रख्यात कवि एवं 'कादंबिनी' के कार्यकारी सम्पादक श्री विष्णु नागर के। श्री नागर, 16 मार्च 2008 को संस्कृति भवन, भोपाल में आयोजित दिव्यजी के जन्म शताब्दी समारोह के भव्य आयोजन में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। समारोह की अध्यक्षता की प्रख्यात कथाकार, नागालैण्ड और त्रिपुरा के पूर्व राज्यपाल पद्मश्री ओ०एन० श्रीवास्तव ने।

'अरुणाचल में हिन्दी' का लोकार्पण

10 मार्च को राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश) में पुस्तक प्रदर्शनी के अवसर पर आयोजित एक समारोह में डॉ० श्यामशंकर सिंह की पुस्तक 'अरुणाचल में हिन्दी' का लोकार्पण विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० के०सी० बेल्लिअप्पा द्वारा किया गया।

लालकृष्ण आडवाणी : विचार यात्रा का लोकार्पण

'लालकृष्ण आडवाणी : विचार यात्रा' का लोकार्पण 18वें विश्व पुस्तक मेले के दौरान वरिष्ठ पत्रकार एम०जे० अकबर ने किया। वरिष्ठ पत्रकार श्री तरुण विजय द्वारा 27 सालों के बीच पूर्व उप-प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी से लिये गये साक्षात्कारों का संकलन है प्रस्तुत पुस्तक। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी और मुख्य वक्ता थे वरिष्ठ पत्रकार वेदप्रताप वैदिक।

'माइ कंट्री माइ लाइफ' का लोकार्पण

19 मार्च को नई दिल्ली के सिरी फोर्ट सभागार में पूर्व राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम के कर-कमलों से नेता प्रतिपक्ष तथा पूर्व उप-प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी की आत्मकथा 'माइ कंट्री माइ लाइफ' का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत ने की।

'सामाजिक विज्ञान हिन्दी विश्वकोश' का लोकार्पण

डॉ० श्याम सिंह 'शशि' द्वारा सम्पादित 'सामाजिक विज्ञान हिन्दी विश्वकोश' के प्रथम व द्वितीय खण्ड के दूसरे संस्करण तथा पाँचवें अन्तिम खण्ड की पाण्डुलिपि का लोकार्पण इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के समकुलपति प्रो० देवेन्द्र कुमार चौधरी ने किया। यह विश्वकोश रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित है।

'भारतीय संस्कृति की रूपरेखा' का लोकार्पण

बाबू गुलाब राय की 120वीं जयन्ती के अवसर पर बाबू गुलाब राय स्मृति संस्थान, आगरा द्वारा आयोजित जयन्ती समारोह में बाबूजी की पुस्तक 'भारतीय संस्कृति की रूपरेखा' का लोकार्पण प्रख्यात कवि गोपालदास 'नीरज' ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति के अध्यक्ष दाऊजी गुप्त थे एवं विशिष्ट अतिथि थे केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक डॉ० शंभूनाथ।

स्वामी रामानंद के जीवन पर आधारित उपन्यास का विमोचन

'पायसपायी' मध्यकालिक भक्ति चेतना के प्रेरणा-पुरुष स्वामी रामानंद के जीवन पर आधारित डॉ० दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' द्वारा लिखित उपन्यास का विमोचन, काशी के पंचगंगाघाट स्थित श्रीमठ में मठ के पीठाधीश्वर स्वामी श्री रामनरेशाचार्य द्वारा किया गया।

'हिन्दी के रुद्राक्षर' और 'डॉ० बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ' का लोकार्पण

पिछले दिनों भारती परिषद्, प्रयाग द्वारा आयोजित डॉ० बालशौरि रेड्डी अभिनन्दन समारोह एवं कवि-गोष्ठी के अवसर पर महिला विद्यापीठ, प्रयाग के सभागार में प्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजनीतिज्ञ पण्डित केशरीनाथ त्रिपाठी ने डॉ० बालशौरि रेड्डी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'हिन्दी के रुद्राक्षर' (आचार्य निशांतकेतु से लिए गए विभिन्न साक्षात्कार) एवं अशोक कुमार ज्योति द्वारा सम्पादित पुस्तक 'डॉ० बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ' का लोकार्पण किया।

सामयिक मीमांसा का लोकार्पण

साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था 'मीमांसा एक पहल' की ओर से साहित्य, कला और समाज की त्रैमासिक पत्रिका 'सामयिक मीमांसा' का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है। गाँधी जयन्ती पर दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैम्पस के टैगोर हॉल में इस पत्रिका के प्रवेशांक का लोकार्पण किया गया।

सन्देश त्यागी के काव्य-संग्रह का लोकार्पण

पिछले दिनों श्रीगंगानगर, राजस्थान में युवा कवि संदेश त्यागी के काव्य-संग्रह का लोकार्पण अक्षरम् संगोष्ठी के सम्पादक नरेश शांडिल्य के द्वारा किया गया।

हिन्दी पत्रिका 'मितान' का लोकार्पण

विगत तीन वर्षों से प्रकाशित महालेखाकार छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिन्दी पत्रिका 'मितान' के नवीनतम अंक का विमोचन करते हुए व्यंग्यकार एवं कवि श्री रामेश्वर वैष्णव ने कहा ''हिन्दी के भविष्य के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं का भविष्य जुड़ा हुआ है। हिन्दी वस्तुत: कई भाषाओं से मिलकर बनी है। हिन्दी को यदि कोई खतरा है तो वह केवल अंग्रेजी से है।''

सामयिकी के हिन्दी विशेषांक का लोकार्पण

राजस्थान के भीलवाड़ा में हिन्दी दिवस पर प्रधान सम्पादक डॉ० भैरनलाल गर्ग द्वारा सम्पादित सामयिकी के हिन्दी विशेषांक का लोकार्पण साहित्य-मण्डल परिसर नाथद्वारा में विख्यात लेखक एवं चिंतक डॉ० नरेन्द्र कोहली (दिल्ली) द्वारा किया गया। डॉ० कोहली ने हिन्दी के उन्नयन में इस प्रेरक-कार्य को रेखांकित करते हुए कहा कि ''भले ही हमारे प्रयास छोटे हों, लेकिन व्यापक स्तर पर हों तो हम हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने में एक दिन अवश्य सफल होंगे। हमें अंग्रेजी के आतंक से घबराने की आवश्यकता नहीं, हम हिन्दी के वर्चस्व के लिये समर्पित होकर कार्य करें।''

हिन्दी में लघु पत्रिकाओं का योगदान

—डॉ० कुमार विमल

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में लघु पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। बांग्ला साहित्य में तो सन् 1970 ईस्वी के दशक में 'लघु' पत्रिकाओं से आगे बढ़कर 'अणु' पत्रिकाओं का प्रचलन हो गया था। उन 'अणु' पत्रिकाओं से भी जागृति आई थी। हिन्दी में यदि 'त्रसरेणु' पत्रिका निकाली जाय, तो वह भी मुझे स्वीकार्य है। प्राय: बड़े-बड़े व्यावसायिक घरानों ने पत्रिकाओं के प्रकाशन पर अपना कब्जा जमा लिया है। कई साहित्यिक और स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी अपनी-अपनी पत्रिका निकाल ली है, जिसमें पहुँच-प्राप्त लेखक छपते रहते हैं और उसी को साहित्य की कथित मुख्यधारा मान ली जाती है। किन्तु, जो साहित्यकार पहुँच-प्राप्त नहीं हैं, जिनके द्वारा लिखा गया साहित्य व्यावसायिक दृष्टि से लाभकारी नहीं है, कई आधुनिकाओं के लेखन की तरह चटखारे-भरा नहीं है, उद्योगपतियों के हित के अनुकूल नहीं है और लीक से हटकर लिखा गया है, उसके प्रकाशन में लघु पत्रिकाओं की प्रशंसनीय भूमिका है। ये लघु पत्रिकाएँ अणिमा में महिमा को चरितार्थ करती हैं। वास्तव में देखा जाए तो ऐसी ही लघु पत्रिकाएँ साहित्य के लोकतंत्र को विकसित संवर्द्धित कर रही हैं। साहित्यिक लघु पत्रिकाओं का दलीय अथवा सांस्थिक हदबंदी से मुक्त होना आवश्यक है, तभी वे स्वस्थ भूमिका का निर्वाह कर पाएँगी।

संतों को जातियों में बाँटना उनका अपमान : लक्ष्मीकान्त शर्मा

भोपाल। 21 फरवरी 08 को साहित्य अकादमी, म०प्र० संस्कृति परिषद द्वारा आयोजित संत रविदास समारोह के शुभारम्भ अवसर पर संस्कृति एवं जनसम्पर्क मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने शुभारम्भ करते हुए कहा कि अपने स्वार्थ के लिए संतों को जातिगत आधार पर बाँटा जा रहा है, यह संतों का अपमान है। ऐसा नहीं होना चाहिए। संतों को बाँट कर सद्पुरुषों के अपमान से समाज में समरसता खत्म होगी।

दो दिवसीय समारोह के समापन में रैदास के छंदों का गायन करते हुए कबीर गायक दयाराम सारोलिया ने कहा कि संतों की वाणी को केवल किताबी आख्यान से ही नहीं बल्कि संगीत की सरस, सहज और सुमधुर लोकभाषा में भी समझा जा सकता है। धन्यवाद देते हुए अकादमी के निदेशक डॉ० देवेन्द्र दीपक ने कहा कि अस्पृश्यता आध्यात्मिक दरिद्रता का लक्षण है। हम स्वस्थ, समर्थ व समरस राष्ट्र चाहते हैं तो जरूरी है कि समरस समाज हो। रविदास श्रम और भक्ति की संयुक्ति थे। तह से सतह पर और सतह से आसमान पर पहुँचना श्रम, संयम व साधना से सम्भव होता है। संत रविदास ने हमारे सामने पुरुषार्थ की कुंजी रखी है।

साहित्य अकादमी में महादेवी वर्मा पर संगोष्ठी

सब आँखों के आँसू उजले, सबके सपनों में सत्य पला और मैं नीर भरी दु:ख की बदली जैसी रचनाओं का उल्लेख करते हुए विद्वानों ने कहा कि आजकल के साहित्यकार संकुचित दायरे में रहते हैं जबकि महादेवी वर्मा ने हाशिए के पात्रों को अपने लेखन में प्रमुखता दी और उनकी सामूहिक पीड़ा को उकेरा। उनकी पीड़ा काव्य की जगह गद्य में अधिक मुखर होती है।

साहित्य अकादमी में महादेवी वर्मा जन्मशती वार्षिकी संगोष्ठी उद्घाटन पर विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने उन्हें प्रतिभा सम्पन्न लेखिका बताते हुए कहा कि महादेवी ने अपने संस्मरणों और रेखाचित्रों में निम्न कुल के चरित्रों को उकेरा है। महादेवी के पात्र न धनवान थे और न ही अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न थे। महादेवी वर्मा ने सौन्दर्य के मानदण्ड बदलते हुए शरीर की जगह भाव सौन्दर्य को प्रमुखता दी। इतना ही नहीं उन्होंने मानवेतर प्राणियों पर भी संस्मरण लिखे। वे सभी को अपना परिवार कहती थीं। डॉ० रामदरश मिश्र ने कहा कि महादेवी वर्मा व्यक्तित्व सम्पन्न लेखिका से बड़ी इंसान थीं। किसी शख्सियत में इंसानियत ही उसे बड़ा बनाती है और महादेवी की शख्सियत के अनेक आयाम थे।

बसंत व्याख्यानमाला सम्पन्न

2 मार्च को मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और हिन्दी भवन न्यास के तत्त्वावधान में हिन्दी भवन में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता और संचार विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई छठी बसन्त व्याख्यानमाला में देश के वरिष्ठ पत्रकारों ने भाग लिया। इस अवसर पर नर्मदा परिक्रमा के वृत्तांतों पर आधारित चर्चित पुस्तक 'सौन्दर्य की नदी' और 'अमृतस्य नर्मदा' के लेखक एवं चिन्तक श्री अमृतलाल वेगड़ को श्री प्रभाष जोशी द्वारा वर्ष 2007 के 'स्व० वीरेन्द्र तिवारी स्मृति सम्मान' से अलंकृत भी किया गया, जिसके अन्तर्गत 21 हजार रुपये की राशि, शॉल और श्रीफल दिया गया।

'कौन कुटिल खल कामी' का लोकार्पण

18 मार्च को हिन्दी भवन, नई दिल्ली में 'अक्षरम्' पत्रिका के तत्त्वावधान में प्रसिद्ध व्यंग्यकार डॉ० प्रेम जनमेजय के सद्य:प्रकाशित व्यंग्य संग्रह 'कौन कुटिल खल कामी' का लोकार्पण प्रसिद्ध समालोचक डॉ० निर्मला जैन ने किया। प्रख्यात साहित्यकार डॉ० कन्हैयालाल नंदन मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकारों सर्वश्री ज्ञान चतुर्वेदी, हरीश नवल, विष्णु नागर तथा प्रदीप पंत ने पुस्तक और लेखक पर अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ० राजेश कुमार ने किया।

'एम०के० गाँधी' का लोकार्पण

5 मार्च को गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान सभागार, नई दिल्ली में प्रसिद्ध चिंतक डॉ० रामकृपाल सिन्हा की पुस्तक 'एम०के० गाँधी' का लोकार्पण प्रमुख विचारक व योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष श्री कृष्णचंद्र पंत ने किया।

'कला, साहित्य और समय' का लोकार्पण

23 फरवरी को नई दिल्ली में साहित्यिक संस्था आस्वाद द्वारा आयोजित एक समारोह में 'नई धारा' के सम्पादक डॉ० शिवनारायण की सद्य:प्रकाशित आलोचनात्मक पुस्तक 'कला, साहित्य और समय' का लोकार्पण प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० रामदरश मिश्र ने किया।

लोकार्पण सम्पन्न

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के खैरताबाद परिसर में डॉ० देवराज अमन द्वारा सम्पादित पुस्तक 'क्षण के घेरे में घिरा नहीं' का लोकार्पण 'स्वतंत्र वार्त्ता' के सम्पादक डॉ० राधेश्याम शुक्ल ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कथाकार डॉ० किशोरीलाल व्यास ने की।

सारस्वत सम्मान एवं लोकार्पण समारोह सम्पन्न

28 फरवरी को विज्ञान परिषद्, प्रयाग द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर इलाहाबाद में आयोजित एक समारोह में वरिष्ठ विज्ञान लेखक तथा 'विज्ञान प्रगति' के पूर्व सम्पादक श्री श्यामसुंदर शर्मा का सारस्वत सम्मान किया गया। परिषद् के उपसभापति प्रो० के०के० भूटानी ने उन्हें शॉल, श्रीफल तथा सरस्वती की प्रतिमा भेंट की। श्री श्यामसुंदर की पुस्तक 'भूकंप' का लोकार्पण प्रो० भूटानी द्वारा, प्रो० शिवगोपाल मिश्र की पुस्तक 'रसायन विज्ञान का रोचक संसार' का लोकार्पण श्री श्यामसुंदर शर्मा द्वारा, श्री विनोदकुमार मिश्र की पुस्तक 'लियोनार्डो द विंची' का लोकार्पण इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० एच०पी० तिवारी द्वारा तथा डॉ० दिनेश मणि की पुस्तक 'जल संसाधन एवं प्रबंधन' का लोकार्पण होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र, मुम्बई के प्रो० विजय सिंह द्वारा किया गया।

लोकार्पण समारोह आयोजित

2 मार्च को बोट क्लब रोड, पुणे में एक समारोह में प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती इंदिरा शबनम 'इंदु' की चार पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नेहपाल सिंह वर्मा ने की। मुख्य अतिथि थे डॉ० दामोदर खड़से तथा महबूब राही। मुख्य वक्ता सर्वश्री उषाराजे सक्सेना, अब्दुल वाहाद साज, नजीर फतेहपुरी तथा रीटा शहाणी थे।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का फरवरी-मार्च 2008 अंक प्राप्त हुआ। स्मृति शेष कालम में वैदिक साहित्य के मूर्धन्य विद्वान डॉ० फतह सिंह का परलोक गमन पढ़कर अत्यन्त दु:ख हुआ। संस्कृत के क्षेत्र में यह एक अपूरणीय क्षति है। जोधपुर पुनश्चर्या कार्यक्रम में उन्हें सुनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उनकी विदुषी कला को भी सुना। संसार में ऐसे विद्वान लोगों की निरन्तर आवश्यकता है। ईश्वर मृतात्मा को शान्ति प्रदान करें।

—प्रो० कुमुद कान्हे, रायपुर (छत्तीसगढ़)

ताजा अंक 9/2-3 मिला है। परम श्रद्धेय मोदीजी को तो मैंने भी नहीं देखा किन्तु जिन्होंने देखा, मिले, सम्पर्क में रहे उनकी बातें पढ़कर व जिन्होंने 'वाङ्मय' के माध्यम से (मात्र) परिचय आत्मीयता प्राप्त की उनके विचार पढ़ मन पुलकित होता है। अंक 2/3 की प्राय: समस्त सामग्री अच्छी लगी है। पृष्ठ 18 के मार्मिक कथन एक से एक हैं। डॉ० एच०के० शर्मा का स्थान छपने से रह गया। डॉ० इन्द्र सेंगर, डॉ० श्यामसुन्दर के विचार श्री पुरुषोत्तमदासजी के प्रति अतिशय श्रद्धाभाव पैदा करते हैं। **—मोतीलाल जैन 'विजय',** कटनी

'भारतीय वाङ्मय' के अंक नियमित मिल रहे हैं, उत्साहवर्धन के लिए धन्यवाद। संस्थागत, पत्र-पत्रिकाओं एवं सक्रिय गतिविधियों के विषय में विस्तृत जानकारी मिलती है, जो सुधी पाठकों के लिए संजीवनी है। यही कामना है कि यात्रा निरन्तर जारी रहे। **—आनंद दीवान,** देहरादून

'भारतीय वाङ्मय' का फरवरी-मार्च 2008 का अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर अच्छा लगा कि साहित्यिक-सांस्कृतिक सरोकारों की यह मासिक पत्रिका शनै:-शनै: अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल सिद्ध हुई है। पाठकों को पुस्तकों से जोड़ने का सतत प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय है। विश्व पुस्तक मेला 2008 की ऐतिहासिक प्रस्तुति, नई पीढ़ी की रुचि-रुझान में आए परिवर्तन के अनुसार पुस्तक व्यवसाय में गुणात्मक वृद्धि, पुस्तकों का लोकार्पण, नव्य प्रकाशित कृतियों की परिचयात्मक समीक्षा, सूचना एवं विमोचन, मोदीजी की स्मृति साहित्यिक धरोहर, सम्मान-पुरस्कार चर्चा, संगोष्ठी आदि के प्रस्तुतीकरण के साथ-साथ हिन्दी के लिए वैचारिक स्वराज की कामना निश्चय ही पत्रिका के क्षेत्र विस्तार का द्योतक सिद्ध हुआ है। जिसमें हिन्दी लेखन पर भी चिन्ता व्यक्त की गई है। पाठकों की संख्या में निरन्तर उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है जिसका साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकारों, पाठकों के पत्र। समवेदना के पत्र निश्चय ही मोदीजी की दिवंगत आत्मा को स्वर्ग में चिरशांति एवं शोक संतप्त परिवार को उनकी पीड़ा में मरहम का कार्य करेंगे। पुस्तक परिचय का सतत प्रकाशन भी नव्यसूचना का परिचायक एवं पाठकीय स्पंदन में सहायक सिद्ध है। आइए हम सब पत्रिका के क्षेत्र-विस्तार और लोकप्रियता हेतु अपनी लेखनी की सहभागिता से इस साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठान में पूर्णाहुति दें ताकि पुनीत गंतव्य की प्राप्ति हो सके।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय,
अलीगढ़

'भारतीय वाङ्मय' का फरवरी-मार्च 2008 संयुक्तांक अच्छा निकला है। सूचनाओं से भरपूर। बधाई लें। **—भारत भारद्वाज,** दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' हमें आश्वस्त कराता है कि सुसंस्कृत प्रकाशकों की निरन्तर विरल होती जा रही परम्परा को आप कायम रखने में सक्षम होंगे। भारतीय वाङ्मय के हर अंक में आप कुछेक विशिष्ट सामग्री देते ही हैं, इसके लिए बधाई!

फरवरी-मार्च 2008 वाले अंक में एक तथ्यात्मक चूक यह हो गयी है कि (पृ. 6 'तसलीमा' सम्बन्धी समाचार में) 'समकालीन भारतीय साहित्य' के सम्पादक के रूप में गिरधर राठी जी का नाम छपा है। वस्तुत: 'भूतपूर्व' संपादक होना चाहिए था। पिछले कुछ वर्षों से प्रसिद्ध कवि-कथाकार-अनुवादक-मीडियाकर्मी अरुण प्रकाश इसका संपादन कर रहे हैं।

भारतीय वाङ्मय अपने ही ढंग की जरूरी पत्रिका बन गयी है।

—प्रो० सुवास कुमार,
हिन्दी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय,
हैदराबाद

समवेदना के पत्र

लम्बे समय से बनारस में नहीं था। घर लौटने पर सूचना मिली और श्रद्धांजलि अंक भी मिला। मोदीजी से बहुत गहरा लगाव था। श्रद्धांजलि अंक पर उनका चित्र देख मेरे आँसू रूक नहीं पाये। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अपने विद्यार्थी जीवन, साठ के दशक के प्रारम्भ से ही मैं आप लोगों से जुड़ा रहा हूँ। मोदीजी की हिन्दी सेवा और बनारस के सन्दर्भ में मैंने जब भी सोचा है, साथ-साथ भारतेंदु हरिश्चन्द्र की याद आती रही है। इसका तात्पर्य समझने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए।

— डॉ० अखिलेश कुमार त्रिपाठी, वाराणसी

आदरणीय पुरुषोत्तमदासजी मोदी के निधन के समाचार से अत्यधिक दु:ख हुआ, वे एक विद्वान लेखक तो थे ही हिन्दी प्रकाशन जगत के एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ भी थे। 'भारतीय वाङ्मय' में प्रकाशित मोदीजी के बेबाक सम्पादकीय सदैव हमें प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

—कमरमेवाड़ी, राजस्थान

आदरणीय पुरुषोत्तमदास मोदीजी के आकस्मिक निधन से विकास संस्कृति परिवार को गहरा धक्का लगा है। आदरणीय मोदीजी ने हिन्दी ग्रन्थों के प्रकाशन में जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, प्रशंसनीय है। अनेक लेखकों को आपने प्रतिष्ठापूर्ण स्थान दिलाया। श्री मोदीजी के निधन से हिन्दी जगत को अपूरणीय क्षति हुई है।

— डॉ० बृजेश सिंह, बिलासपुर

आदरणीय श्री पुरुषोत्तमदास मोदीजी के परलोक गमन का समाचार मिला। इस सत्य को स्वीकार करना अत्यन्त कठिन लगा। कुछ वर्षों पूर्व काशी में आपके संस्थान पर उनसे प्रत्यक्ष में भेंट हुई थी, इस एक मात्र भेंट की स्मृति दिल में आज तक ताज़ा बनी हुई है।

पुस्तक प्रकाशक तो अनेक हैं परन्तु उन जैसा लेखनी का धनी साहित्यकार-प्रकाशक का संयोग विरल है। 'भारतीय वाडमय' में प्रकाशित उनके अग्रलेख सामयिक समस्याओं, खासकर हिन्दी भाषा एवं हिन्दी जगत के प्रति उनके अथाह लगाव को पूरी तरह प्रकट करते हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सद्गुणी साहित्यकार मर्मज्ञ, अपने नाम को सार्थक करने वाले श्री पुरुषोत्तमदास मोदी को हमारी ओर से विनम्र श्रद्धांजली। **—रमेश सुगंधी,** मध्य प्रदेश

कीर्ति शेष मोदीजी पर केन्द्रित श्रद्धांजलि अंक 11, ठीक समय पर मिल गया था। अंक सारगर्भित है परन्तु मेरी गुस्ताखी माफ करें, कहने को विवश हूँ कि उस अजूबे और महानतम व्यक्तित्व के लिए इस अंक की सामग्री नाकाफी है। मेरा विचार है कि स्व० मोदीजी पर एक विशाल संस्मरण/स्मृति अंक निकाला जाना चाहिए जिसमें कि उनके सम्पर्क में आए सब्जी के ठेले वाले से लेकर उच्च स्तर के व्यक्तियों तक की यादें समाहित की जायें।

—डॉ० अवधबिहारी पाठक, दतिया

मानस भवन की संरचना

हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तो रामभक्त थे—सरल सहृदय। उन्हें न कागज चाहिए था, न कीमती पेन। वह तो स्लेट पर ही लिखते थे, जिस पर न काट-छाँट, न काला-पीला, बस मिटाया और संशोधन कर लिया। उसके बाद भले ही वह कीमती कागजों पर छपे और लाखों व्यक्ति उसको पढ़ें।

भारत के महान योगी —विश्वनाथ मुखर्जी

चौदह भाग, 7 जिल्द में, प्रत्येक सौ रुपये

भारत योगियों, संतों, साधकों और महात्माओं का देश है। देश के सभी भागों में अनेक योगी तथा संत हुए हैं जिन्होंने देश की चिन्तनधारा और जीवन को प्रभावित किया है। अपने चमत्कारी जीवन से जनमानस को चमत्कृत भी किया है। ऐसे योगियों का जीवन-चरित चौदह भागों (7 जिल्द) में प्रस्तुत किया गया है।

भाग : 1-2

तंत्राचार्य सर्वानन्द, लोकनाथ ब्रह्मचारी, प्रभुपाद विजयकृष्ण गोस्वामी, वामा खेपा, परमहंस परमानन्द, संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत रविदास, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी विशुद्धानन्द परमहंस।

भाग : 3-4

योगिराज श्यामाचरण लाहिड़ी, महर्षि रमण, भूपेन्द्र नाथ सान्याल, योगी वरदाचरण, नारायण स्वामी, बाबा कीनाराम, तैलंग स्वामी, परमहंस रामकृष्ण ठाकुर, जगद्गुरु शंकराचार्य, सन्त एकनाथ।

भाग : 5-6

स्वामी रामानुजाचार्य, रामदास काठिया बाबा, राम ठाकुर, साधक रामप्रसाद, भूपतिनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी भास्करानन्द, स्वामी सदानन्द सरस्वती, पवहारी बाबा, हरिहर बाबा, साईं बाबा, रणछोड़दास महाराज, अवधूत माधव पागला।

भाग : 7-8

किरणचन्द्र दरवेश, स्वामी अद्भुतानन्द (लाटू महाराज), भोलानन्द गिरि, तंत्राचार्य शिवचन्द्र विद्यार्णव, महायोगी गोरखनाथ, बालानन्द ब्रह्मचारी, प्रभु जगद्बन्धु, योगिराज गंभीरनाथ, ठाकुर अनुकूलचन्द्र, बाबा सीतारामदास ओंकारनाथ, मोहनानन्द ब्रह्मचारी, कुलदानन्द ब्रह्मचारी, अभयचरणारविन्द भक्तिवेदान्त स्वामी, स्वामी प्रणवानन्द, बाबा लोटादास।

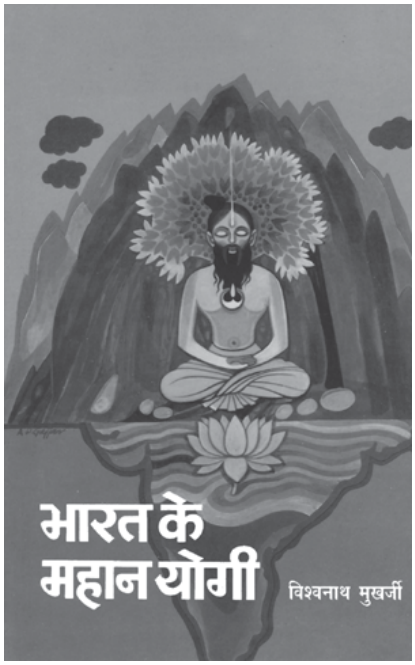

भाग : 9-10

भक्त नरसी मेहता, सन्त कबीरदास, नरोत्तम ठाकुर, श्रीम, स्वामी प्रेमानन्द तीर्थ, सन्तदास बाबाजी, बिहारी बाबा, स्वामी उमानन्द, पाण्डिचेरी की श्रीमाँ, महानन्द गिरि, अन्नदा ठाकुर, परमहंस योगानन्द गिरि, साधु दुर्गाचरण नाग, निगमानन्द सरस्वती, नीब करौरी के बाबा, परमहंस पं० गणेशनारायण, अवधूत अमृतनाथ, देवराहा बाबा।

भाग : 11-12

बालानंद ब्रह्मचारी, श्री भगवानदास बाबाजी, हंस बाबा अवधूत, महात्मा सुन्दरनाथजी, मौनी दिगम्बरजी, गोस्वामी श्यामानन्द, फरसी बाबा, भक्त लाला बाबू, श्रीपाद माधवेन्द्रपुरी, नंगा बाबा, तिब्बती बाबा, गोस्वामी लोकनाथ, काष्ठ-जिह्वा स्वामी, रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी, अवधूत नित्यानन्द।

भाग : 13-14

श्री मधुसूदन सरस्वती, आचार्य रामानुज, आचार्य रामानन्द, अद्वैत आचार्य, चैतन्यदास बाबाजी, भक्त दादू, गुरुनानक देव, सिद्ध जयकृष्ण दास, शैवाचार्य अप्पर, साधक कमलाकान्त, राजा रामकृष्ण, यामुनाचार्य, आचार्य मध्व, स्वामी अभेदानन्द, भैरवी योगेश्वरी, सिद्धा परमेश्वरी बाई।

पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण हैं जो सन्तों और शूरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं। **—गिबन**

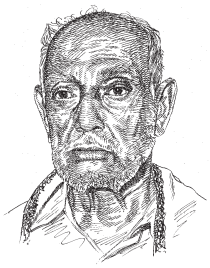

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज की अध्यात्मकपरक कृतियाँ

भारतीय धर्म साधना	80
क्रम-साधना	60
अखण्ड महायोग	50
श्री साधना	50
श्रीकृष्ण प्रसंग	150
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	130
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी	100
दीक्षा	80
सनातन-साधना की गुप्तधारा	120
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2)	70
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3)	50
ज्ञानगंज	60
प्रज्ञान तथा क्रमपथ	80
योग-तन्त्र साधना	60
परातंत्र साधना पथ	40
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन	50
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1)	200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2)	120
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान	60
काशी की सारस्वत साधना	35
भारतीय साधना की धारा	40
स्वसंवेदन	50
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त	120

मनीषी की लोकयात्रा सजि. 300, अजि. 200
(म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन)

कविराजजी के गुरु तथा अन्य योगी संत

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन
—नन्दलाल गुप्त सजिल्द 220, अजिल्द 150

पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी
—सत्यचरण लाहिड़ी 150

बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग 250

पुस्तक परिचय

तथागत

[आत्मकथात्मक उपन्यास]

डॉ० बाबूराम त्रिपाठी

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 252

बाबूराम त्रिपाठी मूलत: कथाकार हैं। यह उनकी पाँचवीं प्रकाशित रचना है। हिन्दी साहित्य में कथायुग चल रहा है। ऐसे प्रतिस्पर्धा और प्रतिक्रियावादी युग में स्वयं को कृती रूप में खड़ा करना एक टेढ़ी खीर है; पर त्रिपाठीजी ने अपनी लेखकीय कुशलता और वस्तुपरक स्थापना से कथाकारों की पंक्ति में अपना नाम दर्ज करा लिया है।

भगवान् बुद्ध भारतीय भूमि के ही रत्न हैं। यह एक ऐसी उर्वर और कांतिमयी जमीन है जिसमें अनेक समाज चिंतकों, लोक कल्याणक महापुरुषों और आध्यात्मिक विभूतियों का अवतरण होता रहा है, जो अपनी उदारता, निश्छल प्रेम और स्वर्गिक आभा से जनसमुदाय को सहजत: आकृष्ट करते रहे हैं। भगवान् बुद्ध उनमें अन्यतम हैं। यही कारण है कि बुद्ध पर हिन्दी कथा साहित्य और काव्य-वाङ्मय में विशेष रुचि दिखायी पड़ती है। कथा साहित्य की इसी सुदीर्घ परम्परा में बाबूराम त्रिपाठी का 'तथागत' अपना एक विशिष्ट अर्थ और सन्दर्भ रखता है।

भौतिक विकास की अतिशयता ने मनुष्य को असंवेदनशील बनाया है। विकास और उपभोग की उद्दाम लालसा ने मनुष्यता को आहत किया है। साहाय्य, संवेदना, दया, करुणा, ममता, आत्मीयता तथा विवेक की सत्ताएँ भौतिक झंझावातों में दरक रही हैं। ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, भोग, अहंकार, काम, मोह तथा रागद्वेष की प्रबलता ने एक ही मांस, मज्जा तथा रक्त से बने मनुष्य को छोटे-बड़े वर्गों में बाँट दिया है। जीवन की सहजताएँ और स्वाभाविकताएँ न मालूम कहाँ खो गई हैं। उच्च विचार प्रकट करने वाले लेखक-चिंतक तथा जनभावना की पक्षधरता वाले विचारक व्यक्ति के स्तर पर पाखण्डी और समाज के स्तर पर व्यक्तिवादी (स्वार्थी) दिखने लगे हैं। मुद्रा और मैथुन की प्रबलेच्छा ने मनुष्य को पशु बना दिया है। जाति-पात की भावना ने बड़े-बड़े लोगों को पंकिल कर दिया है। क्षेत्रवाद की ज्वाला में आर्यावर्त आँच खा रहा है। भौतिक विकास की पराकाष्ठा पर मानवीय विकास की शून्यता में पूरा समाज प्रमत्त हो गया है। बुद्ध की दृष्टि में दु:ख का यही कारण है। इनका विनाश आवश्यक है। मनुष्य को इसी संकट से दूर करने के लिए बुद्ध ने अष्टांग मार्ग और चार आर्य सत्यों का विधान किया था। आत्म कल्याण की जगह लोक-कल्याण को प्रतिस्थापित किया था। बुद्ध के मुख से ये सभी स्वर, त्रिपाठीजी के 'तथागत' में सुने जा सकते हैं।

डॉ० बाबूराम त्रिपाठी ने 'तथागत' उपन्यास में बुद्धोपदिष्ट वचनों को आत्मकथात्मक शैली में ऐसा पिरोया है कि चंदन और पानी का बिम्ब उभरता है, फूल और सुगंध का रूप आकार ग्रहण करने लगता है। मोती और धागे का चित्र सामने खड़ा हो जाता है। बुद्ध ने स्वयं के अतीत का आख्यान कर उन मानवीय मूल्यों की संस्थापना की है जिससे स्वस्थ और समरस समाज की निर्मिति हो सकी है। सम्पूर्ण उपन्यास में बुद्ध का महनीय व्यक्तित्व संरक्षित है। कथाकार की सतर्क दृष्टि ने बुद्ध की ऐतिहासिक मर्यादा और व्यक्तित्व के प्रकाशमय आलोक में एक ऐसे सृजन को आकार दिया है जहाँ से मानवता की विविध धाराएँ प्रवाहित होती हैं। इस रचना में त्रिपाठीजी की लेखकीय लयात्मकता उन्हें समर्थ कृती सिद्ध करती है।

सम्पूर्ण उपन्यास में भाषा का उच्छल प्रवाह और वस्तुतत्व की सुदृढ़ स्थापना दर्शनीय है। मानवतामुखी संदेश से रचना भरी पड़ी है। छोटे वाक्य, प्रचलित शब्दों का नियोजन, और बुद्ध को शास्त्रीय पचड़े से निकालकर सामान्य जन का 'प्रॉफेट' बना देना रचना की बड़ी सफलता कही जा सकती है। बुद्ध के अतीत-जीवन की घटनाओं की स्वर्णाभ रेखाएँ समूची रचना को दमका देती हैं। अतीत के नाम पर नाक-भौं सिकोड़ने वाले विचारकों को यह रचना पुनर्चिंतन का अवसर देती है। सब मिलाकर कहा जा सकता है कि विषय की गहराई ने स्वयं लेखक को प्रव्रजन और उपसम्पदा के सन्निकट खड़ा कर दिया है।

—डॉ० उदयप्रताप सिंह

सजिल्द : रु० 100.00 (ISBN : 978-81-89498-24-5)

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

रसों की संख्या

प्रो० वी० राघवन्

अनुवाद

अभिराज डॉ० राजेन्द्र मिश्र

(*पूर्व कुलपति*, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 208

सजिल्द : रु० 200.00 (ISBN : 978-81-7124-518-5)

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

द्वितीय संस्करण : 2008

पृष्ठ : 398

अर्थविज्ञान भाषाशास्त्र का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। भारतीय वैयाकरणों ने इसको दार्शनिक रूप दिया है। मूर्धन्य वैयाकरण पतंजलि ने महाभाष्य में और भर्तृहरि ने वाक्यपदीय ग्रन्थ में इस विषय का बहुत सूक्ष्म विवेचन किया है। भर्तृहरि का वाक्यपदीय अर्थविज्ञान का प्रौढ़ ग्रन्थ है। यह भाव-गाम्भीर्य के कारण अति-दुरूह माना जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में शब्द, अर्थ, शब्दार्थ-सम्बन्ध, शब्दशक्ति, पद और पदार्थ, वाक्य और वाक्यार्थ, अर्थ विकास तथा स्फोट-सिद्धान्त का सरल और सुबोध भाषा में गूढार्थ स्पष्ट किया गया है।

भारतीय काव्यशास्त्रियों, दार्शनिकों और वैयाकरणों के शब्दार्थ-सम्बन्ध, शब्दशक्ति और स्फोट-सिद्धान्त पर अपने मन्तव्यों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रयत्न किया गया है कि सभी साहित्यशास्त्रियों और दार्शनिकों के विचारों को उचित स्थान दिया जाय। साथ ही उनका आलोचनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया जाय। इस तुलनात्मक अध्ययन के कारण ग्रन्थ का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

भाषा की सरलता, सुबोधता, गूढार्थ का स्पष्टीकरण और तात्त्विक विवेचन ग्रन्थ की उपादेयता सिद्ध करता है। अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन विषय पर यह सबसे अधिक प्रामाणिक ग्रन्थ है।

डॉ० द्विवेदी भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र के मूर्धन्य विद्वानों में एक हैं। डॉ० द्विवेदी ने इस ग्रन्थ के द्वारा अपनी शास्त्रीय सूक्ष्म दृष्टि और गम्भीर चिन्तन का मूर्तरूप प्रस्तुत किया है। आशा है यह ग्रन्थ भाषाविज्ञान-प्रेमी सभी विद्वानों का उचित आदर प्राप्त करेगा।

सजिल्द : रु० 400.00 (ISBN : 978-81-7124-628-1)

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

उत्तिष्ठ कौन्तेय

(हिन्दुत्व एवं आधुनिक विश्व)

डॉ० डेविड फ्राली

अनु. : **केशव प्रसाद कायाँ**

द्वितीय संस्करण : 2008

पृष्ठ : 208

सजिल्द : रु० 250.00

अजिल्द : रु० 175.00

सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प [रेडियो]

विश्वनाथ पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2005

पृष्ठ : 276

- **भारत सरकार द्वारा समादृत एवं पुरस्कृत।**
- **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र मान पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत।**

जनसंप्रेषण का माध्यम रेडियो

— धीरेन्द्रनाथ सिंह

सूचनाओं की जानकारी का शुभारम्भ परिवार से आरम्भ होता है। जब एक परिवार का सदस्य दूसरे परिवार से मिलता है तो सबसे पहले पूछता है—क्या हाल चाल है? दूर के रिश्तेदार का हालचाल पत्रों (चिट्ठियों) के माध्यम से आदान-प्रदान होता है। देश दुनिया की खबर अखबारों के माध्यम से मिलती है। आज भी देश में ऐसी सुविधा नहीं है कि गाँव-गाँव में अखबार पहुँचता हो। पर रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा देश-विदेश, प्रदेश और स्थानीय समाचार जनता तक पहुँचाये जाते हैं। रेडियो आज भी जन-सम्प्रेषण का सबसे बड़ा साधन है। जिस रेडियो के माध्यम से जनता का ज्ञानवर्धन, मनोरंजन होता है उस प्रसार माध्यम की तकनीक सहज नहीं है। आलोच्य ग्रन्थ 'सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प' में समाचार, संगीत कार्यक्रम, वार्ता, साक्षात्कार, नाटक, रूपक, विज्ञापन और उद्घोषणा के तकनीकी पक्ष पर आम जनता को जानकारी देने का प्रयास किया गया है। रेडियो के लिए वार्ता-लेखन, नाटक-लेखन आदि की भी तकनीक है। उसी तकनीक के अनुसार प्रसारण सामग्री तैयार की जाती है।

इस पुस्तक के प्रणेता विश्वनाथ पाण्डेय का जीवन रेडियो और टेलीविजन के लिए समर्पित रहा है। उन्होंने रेडियो से प्रसारित की जाने वाली एक-एक चीज का बड़े निकट से अध्ययन किया है। उन्होंने आकाशवाणी की सेवा में विभिन्न केन्द्रों और पदों पर कार्य करने के बाद आकाशवाणी के निदेशक पद से अवकाशग्रहण किया है। उनके इस ग्रन्थ में रेडियो प्रसारण के विभिन्न पक्षों पर गहराई से विचार कर आम जनता को सहज ढंग से जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

इस पुस्तक के तीन अध्यायों में रेडियो से सम्बन्धित सभी पक्षों पर अधिकारपूर्वक जानकारी दी गयी है। समाचार सुनने में जितना आनन्द आता है, उतना ही कठिन रेडियो के लिए समाचार चयन, सम्पादन और उसका वाचन करना है। लेखक ने हिन्दी में शब्दों के शुद्ध उच्चारण पर भी एक पाठ में विचार किया है। इससे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गयी है। इसी तरह नाटक का प्रसारण सुनने में बड़ा अच्छा और प्राणवान लगता है। पर, रेडियो से नाटक के लिए उसकी पाण्डुलिपि तैयार करना, ध्वनि के माध्यम से स्थिति को सजीव रूप देना आदि ऐसे कार्य हैं जो सहज नहीं हैं। किसी भी कार्यक्रम के प्रसारण के लिए कुछ आचार संहिता भी है। प्रसारण के पूर्व इनका पूरी तरह ध्यान रखना पड़ता है। समाचारों में हम मित्र देशों की आलोचना नहीं कर सकते। किसी भी धर्म या सम्प्रदाय पर आक्षेप नहीं कर सकते। मानहानि वाली बातों से दूर रहना पड़ता है। इस तरह की अनेक मर्यादाएँ हैं जिनका खयाल प्रसारण के समय करना पड़ता है।

भारत में रेडियो का प्रसारण 1927 ई० से शुरू हुआ। पर, उसके विधिवत् प्रसारण का शुभारम्भ जून 1923 माना जाता है। इस पुस्तक में भारत में आकाशवाणी के विकास का प्रामाणिक इतिहास भी दिया गया है, जो पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और मनोरंजक भी है।

रेडियो के माध्यम से हिन्दी का विकास हुआ। इस पुस्तक में इस पक्ष पर भी विस्तार से जानकारी दी गयी है। गैर हिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी पहुँचाने में रेडियो की अहम भूमिका रही है। रेडियो कार्यक्रम से हिन्दीभाषी लोगों ने हिन्दी सीखी और क्षेत्रीय संस्कृति को हिन्दी कार्यक्रमों के माध्यम से उजागर करने में रेडियो ने अग्रदूत का कार्य किया।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय जन्मजात साहित्यिक संस्कारों से सम्पन्न हैं। आकाशवाणी के माध्यम से उन्होंने भारत की सांस्कृतिक चेतना और हिन्दी दोनों को जगाने का कार्य किया है। उन्होंने अपने जीवन के तीन दशक से अधिक का समय आकाशवाणी की सेवा में बिताया है। इसलिए उनकी इस कृति में आकाशवाणी के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक दोनों पक्षों पर बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रकाश डाला गया है। पुस्तक बोधगम्य और अभिव्यक्तिपूर्ण है।

सजिल्द : रु० 250.00 (ISBN : 81-7124-408-4)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आगामी महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

भोजपुरी और हिन्दी *डॉ० शुकदेव सिंह*

बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य
डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

काशी के अध्यात्मवेत्ता विद्वान संन्यासी
पं० बलदेव उपाध्याय

संस्कृत का समीक्षात्मक काव्यशास्त्र
प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र

हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ
सम्पा. : पुरुषोत्तमदास मोदी

संत रज्जब

[संत-साहित्य]

डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय

द्वितीय संस्करण : 2007

पृष्ठ : 212

संत रज्जब अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। प्रभु की भक्ति में अनुरक्त रहने वाले रज्जब ने एक अच्छे कवि के रूप में अपनी प्रेमसाधना को सुन्दर स्वरूप प्रदान किया है। अपने गुरू संत दादूदयाल के प्रति इनकी गुरुभक्ति भी प्रभुभक्ति के समान ही थी। गुरु की कृपा ने इन्हें राम की भक्ति में लीन कर दिया था—

मन माया सों कदे न धापै, सतगुरु साखि बताई।
जन रज्जब याकी यहु औषधि, राम भजन करि भाई॥

रज्जब की वाणी गुरुभक्ति से ओत-प्रोत है। यों सभी संत कवियों ने गुरुभक्ति को श्रेयस्कर माना है। सिख पंथ में तो गुरु ही सर्वस्व है। वहाँ तो 'वाहे गुरु की फतह' की महिमा गाई जाती है और 'आदिग्रंथ' की ही प्रभु के रूप में अभ्यर्थना की जाती है। संत रज्जब की बानी गुरुभक्ति का जीवन्त स्वरूप है। ऐसे संत कवि के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व को उभारने का काम डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय ने अपनी पुस्तक 'संत रज्जब' के माध्यम से किया है। विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित उपर्युक्त पुस्तक एक बड़े अभाव की पूर्ति करती है। संत रज्जब की बानियों के कई संग्रह निकले हैं। किन्तु इस पुस्तक में संत रज्जब की वाणी का सुन्दर सम्पादन तो हुआ ही है, साथ ही संत कवि के कृतित्त्व का सुन्दर और व्यवस्थित विवेचन भी इसमें देखने को मिलता है। इस पुस्तक के लेखक डॉ० पाण्डेय का यह कार्य अन्य संत कवियों की कृतियों को समझने का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

डॉ० पाण्डेय संत साहित्य के मर्मज्ञ हैं। हिन्दी के संत कवियों की विवेचना करते समय उन्होंने अल्पख्यात संतों के वैशिष्ट्य की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया है। डॉ० पाण्डेय लिखते हैं—''अल्पख्यात संत ही भक्ति-आन्दोलन की ताकत हैं। भक्ति-आन्दोलन की मूलचेतना को उत्कर्ष तक पहुँचाने में तथा दूसरी तरफ परिवर्तित करने में भी इन संतों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इन संतों के छोटे स्थान, थांभे, मठ तथा चबूतरों ने व्यापक परिमाण में जनसमुदाय को जोड़ा, उन्हें बाँधे रखा तथा सम्प्रदायानुकूल मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।'' ऐसे संतों में रज्जब का नाम महत्त्वपूर्ण है। ये दादू पंथ के विद्वान् रचनाकार शिष्यों के प्रतिनिधि हैं। संत रज्जब ने निर्गुण पंथ की विचारधारा का परिष्कार

तो किया ही है, साथ ही उन्होंने निर्गुण पंथ के लेखन का भी परिष्कार किया है। उन्होंने निर्गुण नाम जप की महिमा का बखान किया है एवं सगुण वेश और बाह्याडंबर का विरोध किया है। 'सुन्नत' और 'जनेऊ' दोनों झूठे हैं—''सुन्नत झूठ जु बाहर काटी, कपट जनेऊ हाथैं बाँटी।'' सभी बाह्य धर्माचरण 'हरि सुमिरण' के बिना निरर्थक हैं—''नाना विधि धारै बहु धरमा, हरि सुमिरण बिन करतन करमा''। वाद-विवाद से मुक्त रहने का काम भक्ति-आन्दोलन ने किया। दादू के मुख्य शिष्य रज्जब ने उक्त काम को आगे बढ़ाया। रज्जब ने अपने गुरु की परम्परा को लिखित-अलिखित रूप में आगे बढ़ाया और अपने शिष्यों द्वारा संत साहित्य को सुरक्षित रखने का काम करवाया। यह रज्जब की बहुत बड़ी देन है। इसीलिए डॉ० पाण्डेय ने संत रज्जब को भक्ति-आन्दोलन की लिखित और मौखिक दोनों परम्पराओं का संवाहक माना है। रज्जब जैसे साहित्यकार ही सही मायने में भारत की सामासिक संस्कृति के वाहक हैं। 'संत रज्जब' नामक पुस्तक उपर्युक्त तथ्यों को सप्रमाण उजागर करती है।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है संत रज्जब की रचनाधर्मिता को उजागर करना। संत रज्जब ने संत साहित्य के संरक्षण एवं संवर्द्धन का कार्य किया। उन्होंने अपने गुरु के साथ अनेक पूर्ववर्ती संतों की वाणियों का संरक्षण किया जिसमें सगुण एवं निर्गुण कवियों का भेद नहीं किया। रज्जब ने संग्रह-सम्पादन की एक नयी तकनीक विकसित की। सम्पूर्ण संत साहित्य को रागों एवं अंगों में विभाजित किया जिसमें संबद्ध विषय का भी ध्यान रखा गया। ऐसा करने से संत साहित्य को समझना सरल हो गया। रज्जब के तीन ग्रन्थ बताए गए हैं—रज्जब बानी, सर्वंगी, अंगबंधू। 'रज्जब बानी' में रज्जब की रचनाएँ हैं। 'सर्वंगी' में रज्जब सहित 138 संतों की बानियाँ संकलित हैं। 'अंगबंधू' दादूदयाल की रचनाओं का संग्रह है। वास्तव में ग्रन्थों के ग्रंथन की एक सर्वथा नूतन पद्धति 'अंग' को अंगीकृत कर रज्जब ने संकलन-सम्पादन के क्षेत्र में मौलिक कार्य किया है। उपर्युक्त इन्हीं विशेषताओं को उद्घाटित करने के कारण 'संत रज्जब' नामक ग्रन्थ का महत्त्व बढ़ जाता है और यही कारण है कि इस ग्रन्थ को विद्वानों ने स्वीकार किया। 2007 ई० में ही इसके दूसरे संस्करण का निकलना इसकी प्रसिद्धि को प्रमाणित करता है।

— डॉ० राधेश्याम दूबे
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

अजिल्द : रु० 120.00 (ISBN : 978-81-7124-604-5)
सजिल्द : रु० 180.00 (ISBN : 978-81-7124-605-2)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सांस्कृतिक अनुभूति : राजनीतिक प्रतीति | **भारतीय समाज : राजनीतिक संक्रमण**

हृदयनारायण दीक्षित

प्रथम संस्करण : 2008	प्रथम संस्करण : 2008
सजिल्द : रु० 160.00	**सजिल्द : रु० 160.00**
(ISBN : 978-81-7124-620-5)	(ISBN : 978-81-7124-619-9)
पृष्ठ : 172	पृष्ठ : 160

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सामयिक मुद्दों पर बेबाक टिप्पणियाँ

सामयिक विषयों पर अखबारों में फौरी टिप्पणियों का विशेष महत्त्व है। ये टिप्पणियाँ जहाँ जनता को अपनी राय बनाने एवं सरकारी, गैर सरकारी कारवाई पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए उकसाती हैं, वहीं जनमत का निर्माण कर देश को दिशा भी देती हैं। स्वयं राजनीतिक दल और कार्यकर्ता भी इन टिप्पणियों से अपनी समझ बनाते हैं, जनभावना को समझते हैं और उसके अनुसार अपने निर्णय को परिवर्तित संशोधित करते हैं। ऐसे टिप्पणीकार के रूप में हृदयनारायण दीक्षित एक सुपरिचित नाम है। दीक्षित जी प्राय: हर ज्वलंत सामयिक विषयों पर अपनी टिप्पणी अखबारों के माध्यम से दर्ज करते हैं। उनका दायरा संस्कृति, भाषा, अर्थनीति, विदेश-नीति, बहुसंख्यक-अल्पसंख्यकवाद, जातिवाद, लाभवाद इत्यादि तमाम विषयों तक फैला हुआ है। इन विषयों पर वह अपनी बेबाक राय व्यक्त करते हैं। अपनी राय के समर्थन में वह सन्दर्भों, भारतीय-पाश्चात्य धर्म ग्रन्थों, साहित्य का भरपूर उपयोग करते हैं। उनकी इन्हीं टिप्पणियों का दो संग्रह सामने हैं—सांस्कृतिक अनुभूति : राजनीतिक प्रतीति तथा भारतीय समाज : राजनीतिक संक्रमण।

इन दोनों संग्रहों में सौ टिप्पणियाँ संग्रहीत हैं। भूमिका लिखी है वरिष्ठ पत्रकार श्री बच्चन सिंह ने। दोनों पुस्तकें श्री दीक्षित की बेबाकी, अध्ययनशीलता, सन्दर्भप्रियता एवं समाज के प्रति सम्पूर्ण समझ बनाने की कोशिश का परिचय देती हैं। दीक्षित जी की भावभूमि एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि उन्हें स्वभावत: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिन्दुत्व, अल्पसंख्यक तुष्टीकरण इत्यादि प्रत्ययों के पोषक विचारक के रूप में सामने लाती है लेकिन देश के प्रति निष्ठा उन तत्त्वों को भी बेबाकी से रेखांकित करती है, जिनकी वजह से संसदीय लोकतंत्र, राजनीतिक गरिमा, जीवन में पारदर्शिता को क्षति पहुँचती है।

यह सही है कि व्यक्ति की राजनीतिक रुझान चाहे कुछ भी हो, लेकिन जब उसके भीतर देश की समस्याओं को गहराई से जानने, समझने एवं उसे हल करने की छटपटाहट होती है तो कोई भी विचारधारा उसके लिए अछूत नहीं होती और वह उनका अवगाहन करते हुए, मंथन करते हुए उन सूत्रों की तलाश करता है, जो दूरगामी रूप से देश का हित साधते हैं। इसीलिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति रुझान होते हुए भी तथा एक राजनीतिक दल से संबद्ध होते हुए भी दीक्षितजी को न तो गाँधी से परहेज है, न मार्क्स से, न नेहरू से। बौद्धिक कर्म में वे इन सभी का उपयोग करते हैं एवं सन्तुलित दृष्टि बताने का प्रयास करते हैं। मसलन उनकी एक टिप्पणी नक्सलपंथ पर भी है। सामान्यत: नक्सलवादी आन्दोलन वामपंथ समर्थित होने के नाते केवल निंदा का ही शिकार होता रहा। इसे सम्यक रूप में समझने की कोशिश नहीं हुई। लेकिन दीक्षितजी नक्सलपंथ को सन्तुलित रूप में समझने का प्रयास करते हैं। एक ओर यह उसके विदेशी स्रोतों को उजागर करते हैं तो दूसरी ओर उसके देशी कारणों की भी तलाश करते हैं—'लेकिन भारत उदास है। यहाँ के एक बड़े वर्ग के हृदय में विद्रोह का लावा है। नक्सली समस्या कहीं इसी विद्रोह लावा का प्रतीक तो नहीं? नक्सल पंथ बुनियादी समस्या नहीं है। बुनियादी समस्या आर्थिक गैर बराबरी है। यहाँ श्रम का कम मेहनताना और चरित्रहीन अवकाशभोगी लोगों का शोषक साम्राज्य है। अवकाशभोगी, विचारहीन, परजीवी राजनीतिक तंत्र इस समस्या का मूल है।' वह मानते हैं कि नक्सलपंथ हिंसक होने के बावजूद एक विचारधारा है। संसदीय राजनीति में खंड-खंड पाखंड है। नक्सलपंथी हिंसक उभार समाप्त करने के लिए सभी दल विचारनिष्ठ हों। प्रतिभाशाली युवकों खासतौर से दलितों, आदिवासियों, अनुसूचित जातियों, शोषितवर्ग के नौजवानों को आकर्षित करने वाली परिवर्तनकामी तेजस्विता लाएँ। गैरबराबरी की समाप्ति पर सर्वानुभूति बनाएँ।

इसी तरह जातिवाद पर विचार करते हुए दीक्षितजी अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहित करने का आह्वान करते हैं। वह मानते हैं कि राजनीतिक दल जातियों का इस्तेमाल वोट बैंक में कर रहे हैं। अन्तर्जातीय विवाह से जातियों के बाड़े टूटेंगे। भाषा दीक्षितजी के चिंता के केन्द्र में है। संग्रह में कई टिप्पणी हिन्दीभाषा एवं अंग्रेजी के सम्बन्धों पर है, जिसमें दीक्षितजी ने अंग्रेजी के अन्तर्राष्ट्रीय भाषा होने के मिथक को चुनौती दी है।

पुस्तकों के शीर्षक से पाठक के मन में स्वभावत: पूरे विषय के सम्बन्ध में समग्र विश्लेषण को जानने की लालसा जगती है। ये संग्रह पाठकों को विचार करने एवं विचार यात्रा में शामिल होने के लिए उकसाते हैं।

— संजय गौतम

प्राप्त पुस्तकें / पत्रिकाएँ

भारतायनम् : राधामोहन उपाध्याय, कमला पुस्तक भवन, 259ए-रवीन्द्र सरणि, कोलकाता-700007, मूल्य : रु० 355.00

देववाणी संस्कृत में लिखा गया यह प्रकीर्णक काव्य-ग्रन्थ परम्परा से वर्तमान के बीच की सांस्कृतिक यात्रा है। कवि राधामोहन उपाध्याय को इस काव्य-रचना की प्रेरणा जिन विसंगतियों से मिली है उस अंतर्वेदना का उल्लेख कवि के आत्मकथन में किया गया है। इस काव्य ग्रन्थ को क्रमशः स्तुति खण्ड, ऋषि खण्ड, भारतखण्ड, कलि खण्ड, कर्त्तव्य खण्ड नामक पाँच खण्डों में विभाजित किया गया है। वैसे तो ललित-पदावली का प्रांजल-प्रवाह और छन्द-वैविध्य समग्र काव्य में है किन्तु तीसरे खण्ड 'भारतखण्ड' में कवि का कवि-मन समग्र काव्य-संसार के साथ उपस्थित है। इस काव्य में कवि ने विभिन्न स्थापनाओं के समांतर लोकापवाद और उसकी आक्रामकता के साथ अपने ही मन की उपज 'वाचाल' की परिकल्पना की है और जहाँ भी ऐसा विषय उपस्थित हुआ है वहाँ वाचाल के आक्रामक-प्रश्नों का समाधान करते हुए कवि ने शास्त्रीय-स्थापनाओं की तार्किकता सिद्ध करने का प्रयास किया है। मूल रचना के साथ सुगम हिन्दी-अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।

मानस-क्रन्दन : रमेश कुमार पाण्डेय, अरुण प्रिंटिंग प्रेस, रमईपट्टी, मीरजापुर द्वारा प्रकाशित, मूल्य : रु० 60.00

भारतीय-संस्कृति के राष्ट्रीय महाकाव्य 'रामायण' और 'महाभारत' मानव-जीवन के संघर्षों के बीच आदर्शों और मर्यादाओं की स्थापना करते हैं। कठिनतम परिस्थितियों के बीच भी मानव-मन को समाधान देते हैं। 'मानस-क्रन्दन' के निबन्धों में लेखक का मन इन्हीं दोनों महाकाव्यों की उन विसंगतियों को रेखांकित करता है जो प्रश्न की तरह उद्वेलित करते हैं। हमारे जीवन-मूल्यों की स्थापना करने वाले इन महाकाव्यों के चरित्र लोक और वेद द्वारा पूज्य एवं सम्मानित हैं अथवा घृणित और अवमानित हैं। लेखक ने सम्मानित चरित्रों की खामियों और अवमानित चरित्रों की खूबियों का सप्रमाण-तार्किक विश्लेषण किया है जिससे यह पुराना विषय पुनर्विचारणीय बन गया है।

चिन्तन-सृजन (त्रैमासिक) : सम्पादक-बी०बी० कुमार, आस्थाभारती, 12/604 ईस्ट एन्ड अपार्टमेन्ट, मयूर विहार फेज़-1 विस्तार, दिल्ली-110096, मूल्य : रु० 20.00

अक्षरम् संगोष्ठी (त्रैमासिक) : सम्पादक : नरेश शाण्डिल्य, ए-5 मनसाराम पार्क, संडे बाजार रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 मूल्य : रु० 20.00

संचारिका : सम्पादक-नारायण वाकळे, महाराष्ट्र हिन्दी प्रचार सभा, औरंगाबाद, मूल्य : रु० 25.00

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका : सम्पादक-डॉ० एन० चन्द्रशेखरन् नायर, श्री निकेतन, लक्ष्मीनगर, पट्टमपालस पोस्ट, तिरुवनंतपुरम्-694004, मूल्य : रु० 20.00

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् पत्रिका : सम्पादक-डॉ० राम संजीवय्या, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, 58 वेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजी नगर, बैंगलूर-560010, मूल्य : रु० 5.00

अवध अर्चना : सम्पादक-विजयरंजन, 19 अशफाकउल्लाह कालोनी, फैजाबाद, मूल्य : रु० 20.00

राग भोपाली (मासिक) : सम्पादक-शैलेन्द्र कुमार शैली, 22 एच०के० होम्स, बंजारी, कोलार रोड, भोपाल-462042, मूल्य : रु० 15.00

जगत-विज्ञन (मासिक) : सम्पादक-विजया पाठक, एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल, मूल्य : रु० 10.00

सूर-सौरभ (त्रैमासिक) : सम्पादक-डॉ० एन० सुंदरम्, सूर स्मारक मण्डल, नं० 8, 13वीं गली, एरिक्करैसालै, अय्यप्पानगर, मनिपाक्कम, चेन्नै-600091

आकंठ : सम्पादक-हरिशंकर अग्रवाल, इन्दिरा गाँधी वार्ड, तहसील कालोनी, पिपरिया (मध्य प्रदेश), मूल्य : रु० 10.00

आदि कई अन्य पत्रिकाएँ

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 9 **अप्रैल 2008** **अंक : 4**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)